आज़ादी का अमृत महोत्सव

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

अंक : 30
जनवरी-जून
2022

आजादी का
अमृत महोत्सव
विशेषांक

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड एनटीपीसी राजभाषा शील्ड से सम्मानित

12 मई, 2022 को अशोक होटल, नई दिल्ली में माननीय विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, श्री आर.के.सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2020–21 के लिए एनटीपीसी राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किया गया। माननीय विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, श्री आर.के.सिंह के कर–कमलों से यह शील्ड टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई ने प्राप्त की। बैठक में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका पहल का विमोचन भी किया गया।

निदेशक (वित्त) का संदेश

प्रिय पाठकों

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' का यह 30वां अंक है जिसके माध्यम से जनवरी से जून, 2022 तक की अवधि के दौरान निगम में आयोजित हुई राजभाषा गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को एक सूत्र में पिरोने तथा निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों में लेखन की छिपी हुई प्रतिभा को मुखर करने का प्रयास किया गया है।

इस अवधि के दौरान 21 जनवरी, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 33वीं अर्धवार्षिक बैठक आयोजित हुई जिसमें निगम के कारपोरेट कार्यालय को सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की श्रेणी में वर्ष 2020–21 के लिए नराकास वैजयंती का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके साथ ही 12 मई, 2022 को आयोजित हुई विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में निगम को वर्ष 2020–21 के लिए एनटीपीसी राजभाषा शील्ड के प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस अवधि के दौरान दो–दो पुरस्कार प्राप्त होना यह इंगित करता है कि निगम राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रगति पथ पर अग्रसर है । इसका श्रेय निगम में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को जाता है। मैं सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई संप्रेषित करता हूं और यह भी आशा करता हूं कि भविष्य में आपका ओर बेहतर योगदान प्राप्त होगा ताकि राजभाषा का प्रगति पथ स्वर्णिम आभा से युक्त हो सके।

हिंदीतर भाषी होते हुए भी मेरा यह मानना है कि हिंदी में कार्य करना आसान है। प्रायः यह देखने में आया है कि लोग तकनीकी शब्दों के अनुवाद को एक समस्या के रूप में देखते हैं। इस संबंध में राजभाषा विभाग ने अनेक कार्यालय ज्ञापनों के माध्यम से निर्देश दिए हैं कि जो शब्द जिस प्रकार प्रचलन में हैं उनका अनुवाद ढूंढने या जबरदस्ती उनका अनुवाद करके लिखने की आवश्यकता नहीं है अपितु उन्हें उसी रूप में देवनागरी लिपि में लिखना ही पर्याप्त है। हम जितनी अधिक सरल हिंदी का प्रयोग करेंगे उतना ही अधिक हिंदी का विकास, प्रचार एवं प्रसार होगा। हिंदी टाइपिंग के लिए अनेक टूल्स विकसित हो जाने के बाद अब हिंदी का प्रयोग करना कोई मुश्किल कार्य नहीं रहा है। अतः मेरा अनुरोध है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक करते हुए राष्ट्र भावना से ओतप्रोत इस यज्ञ में अपनी ओर से आहुतियां देते रहें।

जे.बेहेरा

(जे.बेहेरा)

मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) का संदेश

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की अभिदृष्टि विश्वस्तरीय ऊर्जा इकाई बनने की है जो पर्यावरण एवं सामाजिक मूल्यों को भी संरक्षण प्रदान करे। कंपनी देश को स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध कराने के प्रति कटिबद्ध है और यह जल विद्युत क्षेत्र के साथ–साथ अक्षय ऊर्जा के अन्य स्रोतों जैसे सौर एवं पवन के माध्यम से भी बिजली का उत्पादन कर रही है। उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान में अक्षय ऊर्जा पार्क एवं परियोजनाएं स्थापित करने के लिए तेजी से कार्य किया जा रहा है। उत्तराखंड के साथ–साथ देश के अन्य राज्यों एवं विदेश में भी विद्युत उत्पादन की संभावनाओं की तलाश जारी है। अपने मुख्य व्यापारिक लक्ष्यों को पूरा करने के साथ ही पर्यावरण एवं सामाजिक मूल्यों की रक्षा करने के प्रति भी निगम पूरी तरह सजग है और इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि कंपनी की परियोजनाओं से पर्यावरण को किसी प्रकार का खतरा उत्पन्न न हो। परियोजनाओं के कारण विस्थापित होने वाले परिवारों के पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन पर भी समुचित ध्यान दिया जाता है। कंपनी में सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक गतिविधियों का संचालन निरंतर किया जा रहा है जिनमें हितधारकों के सर्वांगीण विकास के लिए अथक प्रयास किए जा रहे हैं।

कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन में भी उत्कृष्टता लाने के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं। यह दृढ़ इच्छाशक्ति का ही द्योतक ही है कि विगत दो वर्षों में कोविड–19 के कारण उत्पन्न हुई विषम परिस्थितियों के बावजूद राजभाषा की गतिविधियों व कार्यक्रमों में कोई ठहराव नहीं आया। इस दौरान राजभाषा संबंधी समस्त गतिविधियों को ऑनलाइन माध्यमों से आयोजित किया गया और जिन कार्यक्रमों में फिजीकल गैदरिंग की आवश्यकता थी, उनमें कोविड प्रोटोकॉल का पालन किया गया। इस अवधि के दौरान निगम की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' का प्रकाशन भी नियमित अंतराल पर किया गया। अधिकारियों व कर्मचारियों के निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप ही टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश को वर्ष 2020–21 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार के द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा 12 मई, 2022 को विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में इसी अवधि अर्थात 2020–21 के लिए निगम को एनटीपीसी राजभाषा शील्ड का प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार माननीय केंद्रीय केबिनेट मंत्री (विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा), श्री आर.के.सिंह के कर–कमलों से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई ने प्राप्त किया। यह उपलब्धि निगम के लिए गौरव की बात है। मैं आशा करता हूं कि इसी प्रकार हम सबके प्रयास जारी रहेंगे ताकि भविष्य में निगम नई ऊंचाईयों को छू सकें।

(वीर सिंह)

संपादकीय

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका ''पहल'' का जून 2022 अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। यह अंक "आजादी का अमृत महोत्सव" विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

आजादी का अमृत महोत्सव का शुभारंभ गत वर्ष 2021 में 12 मार्च से हुआ। यह देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर भारत सरकार की अनूठी पहल है जिसके माध्यम से आजादी के बाद की विकास यात्रा एवं इसके दौरान अर्जित की गई उपलब्धियों को उत्सव के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इसके अंतर्गत संपूर्ण राष्ट्र में हमारी प्राचीनतम संस्कृति, गौरवशाली इतिहास एवं इसे रचने वाले राष्ट्रनायकों और सैनानियों को याद करने के लिए विविधतायुक्त कार्यक्रम एवं गतिविधियां संचालित की जा रही है। इसी क्रम में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में 12 जुलाई, 2022 से इसके स्थापना दिवस समारोह से प्रारंभ करते हुए 15 अगस्त, 2022 तक आजादी के अमृत महोत्सव को एक पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत राष्ट्र–भक्ति से ओतप्रोत अनेक कार्यक्रम और गतिविधियां संचालित की जा रही हैं।

भारतवर्ष ने सदियों तक पराधीनता की प्रताडना झेली है। गोस्वामी तुलसीदास का 'पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं' का तत्कालीन उद्घोष इस बात का प्रतीक है कि उनके मन मस्तिष्क में उस समय भी देश को स्वाधीन कराने की कामना रही होगी। अंग्रेजों के खिलाफ हुए अंतिम स्वतंत्रता संग्राम में पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने में हिंदी भाषा ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसका कारण यही था कि पूरे देश में हिंदी को समझा जाता था। हिंदी के अनेक कवियों एवं रचनाकारों ने अपनी ओजस्वी रचनाओं से संपूर्ण राष्ट्र में नवयुवकों के दिलों में देश प्रेम की लौ प्रज्ज्वलित की जिसने ज्वाला का रूप ले लिया। ऐसे रचनाकारों में रामधारी सिंह दिनकर, रामप्रसाद बिस्मिल, सुब्रह्मण्यभारती, अशफ़ाक उल्ला खाँ, महादेवी वर्मा, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहन लाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, हरिवंशराय बच्चन आदि के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं।

संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने में हिंदी के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने यह समझा और जाना कि हिंदी ही संघ की राजभाषा बनने की सच्ची अधिकारिणी है। संविधान सभा में लंबी चर्चा के बाद 14 सितंबर सन् 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी संघ की राजभाषा स्वीकार की गई। इसी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है। भारतवर्ष एक बहुभाषा–भाषी देश है परन्तु हिंदी सभी क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य एक सेतु का कार्य करने में सक्षम है। अनेक क्षेत्रीय भाषाएं ऐसी हैं जिनका अनुवाद सीधे दूसरी क्षेत्रीय भाषा में नहीं किया जा सकता जैसे गुजराती भाषा की पुस्तक का मणिपुरी में सीधा अनुवाद कराना आसान नहीं है। लेकिन गुजराती से हिंदी में अनुवाद करने के बाद हिंदी से मणिपुरी में आसानी से अनुवाद किया जा सकता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी क्षेत्रीय साहित्यकारों के लिए हिंदी समझना मुश्किल कार्य नहीं है।

इसलिए आइए! हम सब हिंदी में अपना सरकारी कामकाज कर इसका मान बढ़ाएं और आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के सही मायने सिद्ध करें ।

(पंकज कुमार शर्मा)
उप प्रबंधक (राजभाषा)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक-30)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री जे. बेहेरा
निदेशक (वित्त)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

श्री ईश्वरदत्त तिग्गा
अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)

संपर्क सूत्र
संपादक
"पहल"
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम,
बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201
उत्तराखंड

दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेलः pankajksharma@thdc.co.in
thdchindi@gmail.com

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विषय सूची

लेख/प्रेरक प्रंसग/लघुकथा

1. टीएचडीसी में स्थापना का एकीकरण 5
2. विद्युत वाहन–भविष्य का वाहन एवं पर्यावरण मित्र–3 7
3. 22 मार्च–विश्व जल दिवस 11
4. सोमनाथ 12
5. जब एक कवि, लेखक व शायर से हुई अचानक भेंट 14
6. कबीर – एक समाज सुधारक 15
7. मृत्यु के नाम पत्र 17
8. चन्देरी 18
9. नींद न आने पर करें ये विशिष्ट उपाय 22
10. राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 23
11. राज्यों का वर्गीकरण–क्षेत्रवार 24

कविताएं/क्षणिकाएं/विचार

12. सड़क 25
13. मेरी मां 26
14. कहा सुना सब रह जाता है 26
15. न जाने ये कैसी मझधार 27
16. हार नहीं मानती जिंदगी 27
17. मेरी दुनिया मां का आंचल 28
18. ये वादियां 28
19. मेरे देश की मिट्टी 29
20. सुबह कहती है हमसे 29

राजभाषा गतिविधियां

21. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 30
22. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 31
23. हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन 35
24. खुर्जा कार्यालय में कवि सम्मेलन का आयोजन 36
25. कारपोरेट कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण 37
26. नराकास हरिद्वार की अर्धवार्षिक बैठक 38
27. नराकास टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक 39
28. हास–परिहास 40

टीएचडीसी इंडिया लि. में स्थापना का एकीकरण

लेख

वीर सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), ऋषिकेश

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने हाल ही में 01 जुलाई 2022 से पूरे निगम के स्थापना प्रकार्य का एकीकरण किया है जो कि वास्तव में निगम के लिए मील का पत्थर साबित होगा। अप्रेंटिसशिप, चिकित्सा के लिए रेफर करने एवं सेवानिवृत्ति के बाद चिकित्सा हितलाभों से संबंधित मामलों को छोड़कर अन्य सभी स्थापना से संबंधित मामलों का निपटारा कॉरपोरेट कार्यालय की मानव संसाधन टीम के द्वारा किया जाएगा। मैं इसे मील का पत्थर इसलिए मानता हूं क्योंकि इस प्रक्रिया में बहुत अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। यह केवल प्रक्रिया–विधि का ही एकीकरण नहीं था अपितु इसमें टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के विभिन्न कार्यालयों में विविधतायुक्त कार्य संस्कृति का एकीकरण भी शामिल है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को भावी वर्षों में इससे काफी लाभ प्राप्त होगा।

स्थापना के एकीकरण में निम्नलिखित तीन प्रमुख आयाम शामिल है :–

1. प्रणाली एकीकरण
2. प्रक्रिया एकीकरण
3. आंकड़ों का एकीकरण

आइए! हम एकीकरण के इन तीनों प्रकारों की आवश्यकता और इनकी चुनौतियों एवं लाभों का विश्लेषण करते हैं।

स्थापना से संबंधित मामलों के एकीकरण की आवश्यकता और लाभ : -

संगठनात्मक जीवन चक्र से गुजरते समय किसी संस्थान को अपने व्यवसायिक वातावरण के अनुसार कुछ आधारभूत परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है। यह कहना गलत होगा कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड इस समय विकास चरण में चल रही है। निगम ने नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाते हुए 15 अप्रैल, 2022 को 10,000 मेगावाट की सौर विद्युत ऊर्जा के उत्पादन के लिए आरआरईसीएल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं और यह नई पीएसपी परियोजनाओं में भी उद्यम कर रही है। इसलिए यह महसूस किया गया कि सीमित मानवशक्ति एवं उभरती हुई व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुसार कार्यप्रणाली को संरेखित करने की आवश्यकता है। यह वर्तमान परिस्थितियों में और भी अधिक आवश्यक हो गया है क्योंकि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए भारत में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में नई उड़ान भरने जा रही है।

यहां यह समझना आवश्यक है कि स्थापना के केंद्रीकरण से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के विभिन्न अनुभागों/विभागों के मध्य प्रक्रियाओं में समानता आएगी, नियंत्रण में सुधार होगा, आंकड़ों की गुणवत्ता सुधरेगी तथा बेहतर तालमेल स्थापित होगा। इससे बजट तैयार करने एवं अभिलेखों के प्रबंधन में भी समानता आएगी। यह आंकड़ों के संचलन में निर्णय लेने की प्रक्रिया को भी प्रोत्साहित करेगा। केंद्रीकरण कर्मचारियों के लिए भी लाभदायी साबित होगा क्योंकि यह कर्मचारियों के द्वारा लिए जाने वाले सामान्य नीतिगत ढांचे के द्वारा सुशासित होने वाले ऋणों, अग्रिमों, हितलाभों आदि के संबंध में त्वरित निर्णय लेने के लिए ढांचे का निर्माण भी करेगा। इससे आसान अनुपालन भी सुनिश्चित होगा।

स्थापना का केंद्रीकरण कैसे किया गया ?

स्थापना के केंद्रीकरण का कार्य आसान नहीं था। शुरुआत में इसके लिए अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें कर्मचारियों के वेतन की प्रक्रिया के लिए उपस्थिति की प्रक्रिया की स्थापना करना, कर्मचारियों के द्वारा उनकी

सेवानिवृत्ति पर यूनिट स्तर पर किया गया प्रलेखीकरण, व्यक्तिगत फाइलों को ट्रांसफर करना, कर्मचारियों को इन परिस्थितियों के बारे में बताना आदि शामिल है। इन चुनौतियों की पहचान करने एवं इनका समाधान करने के लिए कई दौर की बैठकें, विचार–विमर्श तथा मंथन किए गए।

निकट भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए एचआरएमएस में मॉड्यूलों के कस्टोडियन का पुनर्मापन कार्य के वितरण के आधार पर किया गया तथा एचआरएमएस में नया मॉड्यूल विकसित किया गया। इसकी शुरुआत कारपोरेट कार्यालय में हजारों व्यक्तिगत फाइलों के ट्रांसफर के साथ हुई। मुझे आपको यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है वाहन, अवकाश, एचआरए, लीज, सीएचईएल, मृत्यु हितकारी निधि, सोडेक्सो एवं पासपोर्ट के लिए अनापत्ति आदि अधिकांश प्रक्रियाएं शत–प्रतिशत केंद्रीकृत हो गई है। इसके कार्यान्वयन के लिए एफएमएस को एचआरएमएस के साथ एकीकृत कर दिया गया है। वित्त एवं लेखा विभाग भी इस परिवर्तन में पूरी सक्रियता से योगदान दे रहा है। प्रक्रियाओं को डिजीटाइज करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं जिससे कि कर्मचारी भविष्य में और बेहतर अनुभव कर सकें। इससे अतिरिक्त टिहरी में पहले से ही केंद्रीकृत की गई वित्तीय सहायता को भी ऋषिकेश में शिफ्ट कर दिया गया है। अनेक प्रणालीगत विकास जैसे फेस रिकोगोनाइजेशन की नई उपस्थिति प्रणाली लागू करने पर अभी भी कार्य चल रहा है।

आगे की कार्रवाई में विदेश यात्रा के लिए अनापत्ति, स्टॉक, रजिस्टरों, नियुक्ति प्रक्रिया और परिवीक्षा पुष्टिकरण जैसी प्रक्रियाओं को डिजिटाइज करना शामिल है। इससे मानव संसाधन की सेवा देने की समय–सीमा भविष्य में बहुत कम हो जाएगी। यह बहुत उत्साहजनक है कि मानव संसाधन प्रकार्य उत्साहवर्धक एवं कर्मचारी अनुभव में वृद्धि के साथ नए दौर की ओर बढ़ रहा है। मैं यह कहते हुए अपने लेख को समाप्त करता हूं कि **"उत्कृष्टता एक दिन में नहीं आती, अपितु यह निरंतर प्रणालीगत सुधार से आती है"।**

विद्युत वाहन–भविष्य का वाहन, पर्यावरण मित्र वाहन भाग : 3

लेख

शिवराज चौहान
उप महाप्रबंधक (पीएसपी), टिहरी

पिछले 02 अंकों में आपने विद्युत वाहनों के इतिहास, परीक्षण काल, इनके मुख्य घटक, रिड्यूसर एवं बैटरी, बैटरी प्रबंधन प्रणाली, बैटरी ताप प्रणाली, ऑनबोर्ड चार्जर, इलैक्ट्रिक पावर कंट्रोल यूनिट, ऊर्जा स्रोत, इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रकार, इलेक्ट्रिक वाहन के लाभ और हानियां आदि पढ़ा। आइए ! इस अंक में इससे संबंधित और जानकारी प्राप्त करते हैं।

इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने से पूर्व ध्यान में रखने योग्य बातें :

वैश्विक बाजार के साथ–साथ भारतीय बाजार में भी इलेक्ट्रिक वाहन की मांग बीते कुछ समय में काफी बढ़ी है। पेट्रोल और डीजल के लगातार बढ़ते दाम इसका मुख्य कारण है। बाजार में मौजूद कंपनियां कारों की बेहतर ड्राइविंग रेंज का दावा करती है, किन्तु इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने से पूर्व ग्राहकों को बैटरी की रेंज और साइकल पर खासा ध्यान देना चाहिए। अगर आप भी इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने का मन बना चुके हैं तो आपको निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है:

1. वाहन को खरीदने से पूर्व यह जरूर चेक कर लें कि बैटरी कितनी शक्तिशाली (KWH) है।
2. सामान्यतः एक 15 KWH बैटरी से 100 किमी. तक कार चलायी जा सकती है कोशिश यह होनी चाहिए कि कम से कम इतनी क्षमता वाला वाहन अवश्य खरीदें।
3. इसका अवश्य पता करें कि बैटरी कुल कितने घंटे में पूर्णतः चार्ज होती है। सामान्य चार्जिंग में 15 से 18 KWH की बैटरी को पूर्णतः चार्ज होने में 9 से 11 घंटे लगते हैं।

4. इलेक्ट्रिक वाहन पूर्णतः हाई पावर बैटरी पर निर्भर होते हैं, इसलिए समय–समय पर इन्हें चार्ज करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही वाहन क्रय करें।
5. भारत में अभी तक पर्याप्त संख्या में चार्जिंग स्टेशन उपलब्ध नहीं हैं। ऐसी स्थिति में वाहन को अभी हर जगह ले जा पाना संभव नहीं है।

सरकार की प्रोत्साहन नीतियां :-

वर्ष 2030 तक केवल इलेक्ट्रिक वाहन बेचने की मई 2017 में घोषणा करने वाला भारत पहला देश है। भारत सरकार ने 10,000 इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद के लिए निविदा जारी कर योजना का आरंभ कर दिया है, जिसे अभी तक विश्व की सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक वाहन खरीद माना गया है। जिसके पीछे सरकार की मंशा न केवल वायु–प्रदूषण कम करने बल्कि पेट्रोलियम आयात बिल व वाहनों की परिचालन लागत कम करने की है। इलेक्ट्रिक वाहनों की आरंभिक लागत कम करने के लिए विभिन्न देशों की सरकारों ने अनेकों कदम उठाए हैं। जिनमें प्रोत्साहन अनुदान द्वारा खरीद मूल्य की भरपाई, कम कर दरें या कुछ करों में छूट तथा चार्जिंग के बुनियादी ढ़ांचे में निवेश सम्मिलित है। कुछ अमेरिकी राज्यों में इलेक्ट्रिक वाहनों पर बड़े प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए कार कम्पनियों ने स्थानीय कम्पनियों से भागीदारी की है।

फ्रांस और ब्रिटेन ने भी 20% तक गैस और डीजल आधारित कारों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने की योजना की घोषणा की है। आस्ट्रिया, चीन, डेनमार्क, जर्मनी, आयरलैण्ड, जापान, नीदरलैण्ड, पुर्तगाल, कोरिया और स्पेन ने भी इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री के लिए लक्ष्य निर्धारित किए हैं।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग की स्थिति :-

इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग भारत में एक प्रगतिशील उद्योग है और इलेक्ट्रिक वाहन (EV) तेजी से आधुनिक जीवन का हिस्सा बनते जा रहे हैं। केंद्र और राज्य सरकारों ने इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को बढ़ाने के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएं आरंभ की हैं, जबकि कई नियम व दिशा–निर्देश पहले से ही प्रभावी हैं। यद्यपि देश इन वाहनों के लाभों के कार्यान्वयन हेतु उत्साहित है, किन्तु चार्जिंग के बुनियादी ढ़ाचे की कमी, उच्च प्रारम्भिक लागत और नवीकरणीय ऊर्जा से उत्पादित विद्युत की कमी जैसी अनेकों चुनौतियां हैं, फिर भी विभिन्न कम्पनियां इस क्षेत्र में सुधारों की ओर अग्रसर हैं।

दिसंबर 2018 में केंद्र सरकार ने EV Charging के बुनियादी ढ़ांचे के विकास के लिए मानक दिशा–निर्देश जारी किए थे। इन दिशा–निर्देशों में प्रावधान है कि सड़क और राजमार्गों पर हर 25 किमी. पर एक चार्जिंग स्टेशन की उपलब्धता हो। इनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लि. (EESL) प्रतिष्ठित निर्माताओं से सरकारी विभागों को किराए पर अथवा अपफ्रन्ट सेल पर उपलब्ध कराने के लिए 10000 इलेक्ट्रिक वाहन खरीद रहा है।

''राष्ट्रीय विद्युत गतिशीलता मिशन योजना'' (National Electric Mobility Mission Plan) 2020 के तहत भारत सरकार ने राष्ट्रीय ईंधन सुरक्षा के उद्देश्य से हाइब्रिड व इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रोत्साहन हेतु नीति बनाई है। इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए भारत सरकार ने देश में हाइब्रिड व इलेक्ट्रिक वाहनों की पूर्ण श्रृंखला को देश में ही विकसित करने व इन वाहनों को अंगीकार करने के उद्देश्य से Faster Adoption and Manufacturing of Hybrid & Electric Vehicles (FAME) योजना National Mission on Electric Mobility 2011/National Electric Mobility Mission Plan 2020 के तहत 2013 में लागू की गई, जो 31 मार्च 2021 तक लागू रही। इस बीच 01 अप्रैल 2019 से फेम फेज–II योजना लागू की गई है, जिसे 31 मार्च 2022 तक चालू रहना था, किंतु भारत सरकार ने 25 जून 2021 को जारी गजट नोटिफिकेशन द्वारा FAME-II योजना को 31 मार्च 2024 तक विस्तारित कर दिया गया है। फेम फेज–II के अंतर्गत भारत सरकार ने मार्च 2022 तक सात हजार ई–बस, पांच लाख ई–3–व्हीलर, पचपन हजार ई–4–व्हीलर और 10 लाख ई–2–व्हीलर की उत्पन्न मांग में सहायता करने का लक्ष्य रखा है। ये सभी लक्ष्य बुनियादी ढ़ांचे के विकास के बाद ही प्राप्त करने संभव होंगे क्योंकि अभी तक इस योजना के तहत देशभर में 126 उपलब्ध वाहन माडलों के बावजूद एक लाख के लगभग ही वाहन बेचे जा सके हैं।

इस योजना के तहत जून 2021 से सभी हाईब्रिड और इलेक्ट्रिक दुपहिया वाहनों पर प्रोत्साहन राशि रू.10,000/ किलोवाट (KWH) से बढ़ाकर रू. 15,000/किलोवाट (KWH) कर दी गई है, जो बसों हेतु रू.20,000/किलोवाट (KWH) है। जिसकी अधिकतम सीमा बसों और दुपहिया वाहनों हेतु वाहन की कीमत की 40% तथा अन्य वाहनों हेतु वाहन की कीमत की 20% है। सब्सिडी का लाभ कम लागत वाले वाहनों हेतु ही सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सब्सिडी पाने के लिये दुपहिया वाहनों की अधिकतम लागत रू 1.50 लाख, तिपहिया वाहनों की अधिकतम लागत 5.0 लाख, चौपहिया वाहनों (ई–कार व हाईब्रिड कार) की अधिकतम लागत रू 15 लाख तथा ई–बस की अधिकतम लागत रू. 2.0 करोड़ निर्धारित की गयी है। इस योजना के तहत 31 मई 2022 तक देशभर में 4 लाख वाहनों की बिक्री हो चुकी है।

2021 में भारत सरकार ने ''Go electric'' अभियान की शुरूआत की है। जिसके तहत इलेक्ट्रिक वाहनों और इलेक्ट्रिक खाने–पकाने के उपकरणों के प्रचार–प्रसार व ऊर्जा सुरक्षा पर जोर दिया जा रहा है। इस अभियान के अगले क्रम में भारत सरकार की इलेक्ट्रिक वाहनों हेतु पंजीकरण शुल्क को समाप्त करने तथा राज्य सरकारों के स्तर पर करों को कम करने का प्रावधान है। केंद्र सरकार के प्रयासों के अनुक्रम में विभिन्न राज्य सरकारों यथा – आंध्र प्रदेश, बिहार,

दिल्ली, गुजरात, पंजाब, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश ने इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए, वाहनों, विद्युत चार्जिंग स्टेशनों तथा इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग Equipments पर विभिन्न प्रकार की छूटों (कर छूट, रजिस्ट्रेशन छूट, कीमतों में सब्सिडी, टैक्स फ्री अवधि इत्यादि) प्रोत्साहन नीतियों का प्रावधान किया है। भारत सरकार ने चार्जिंग स्टेशनों के लिए घरेलू विद्युत दरों का प्रावधान किया है और साथ ही ब्यूरो आफ इनर्जी एफीसिएंसी (BEE) का चार्जिंग ढांचे को विकसित करने के लिए नोडल एजेंसी नियुक्त किया है।

चार्जिंग–बैटरी की चार्जिंग निम्नलिखित दो प्रकार की विद्युत सप्लाई से की जा सकती है:

1. **ए.सी.चार्जिंग**– यह एक धीमी चार्जिंग पद्धति है, जिसमें 6 से 8 घंटे लगते हैं। इस चार्जिंग में IEC 60309 कनेक्टर का उपयोग किया जाता है और (15 Amp 230 Volts) घरेलू विद्युत आपूर्ति जिसमें 2500 Watt आपूर्ति होती है, से चार्ज किया जा सकता है। EV बेचने वाली कंपनियां ग्राहक के घर पर चार्जिंग यूनिट इंस्टाल करती हैं और चार्जिंग के लिए अलग से कनेक्शन लेने की आवश्यकता भी नहीं होती। इस चार्जिंग हेतु 3–पिन, 15 Amp टॉप का उपयोग किया जा सकता है, किन्तु 22 KW से अधिक की चार्जिंग के लिए Type-2 कनेक्टर का उपयोग आवश्यक है, इसके लिए 3-Phase पावर सप्लाई भी उपयोग की जा सकती है।

2. **डी.सी.चार्जिंग**– डी.सी. चार्जिंग को त्वरित चार्जिंग कहा जाता है, जिसमें पूर्ण चार्जिंग हेतु 60 से 110 मिनट का समय लगता है। इस चार्जिंग में 200Amp. 15 KW और GB/T20234 कनेक्टर का उपयोग किया जाता है। इसमें अधिकतम आउटपुट वोल्टेज 100 VDC होती है। बाजार में उपलब्ध महिन्द्रा ई–वैरिटो, महिन्द्रा–ई–20, टाटा–ई–टिगोर इसी चार्जिंग पर आधारित है। टाटा–ई–टिगोर उच्च वोल्टेज इलैक्ट्रिक आर्किटेक्चर–जिपट्रान द्वारा संचालित होती है।

भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुसार विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशनों पर एक या एक से अधिक इलेक्ट्रिक चार्जिंग प्वाइंट/बोर्ड पर निम्न में से एक या एक से अधिक प्रकार के चार्जर अथवा चार्जरों के संयोजन होने आवश्यक हैं :

चार्जर का प्रकार	क्र. स.	चार्जर कनेक्टर	रेटेड आउटपुट वोल्टेज (V)	कनेक्टर गन (CG) की संख्या	चार्जिंग वाहन का प्रकार
त्वरित	1	मिश्रित चार्जिंग सिस्टम (CCS) (Min. 50 KW)	200–750 या अधिक	1 CG	चौपहिया
	2	चार्ज डे मोव (CHAdeMO) (Min. 50 KW)	200–500 या अधिक	1 CG	चौपहिया
	3	टाइप–2 एसी (Min. 22 KW)	380–415 या अधिक	1 CG	दुपहिया, तिपहिया, चौपहिया
मन्द/मध्य	1	भारत डीसी–001 (15 KW)	48	1 CG	दुपहिया, तिपहिया, चौपहिया
	2	भारत डीसी–001 (15 KW)	72 या अधिक	1 CG	चौपहिया
	3	भारत एसी–001 (10 KW)	230	3-3 KW के 3 CG	चौपहिया
*टाइप–2 एसी (Min. 22 KW) चार्जर कनेक्टर एक एडाप्टर का उपयोग कर दुपहिया व तिपहिया वाहन के चार्जिंग योग्य बन सकता है।					

चार्जिंग के बुनियादी ढ़ाचें का विकास प्रोत्साहन :-

भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग व्यवसाय के लिए लाइसेंस की आवश्यकता की छूट दी है। सरकार ने निर्धारित किया है कि शहरों (40 लाख से अधिक आबादी) में 3 किमी. x 3 किमी. के ग्रिड में कम से कम एक चार्जिंग स्टेशन हो और राजमार्गों पर हर 25 किमी. में हाइवे के दोनों ओर एक चार्जिंग स्टेशन हो। इस बुनियादी ढ़ांचे के विकास हेतु 2022 तक का लक्ष्य रखा गया है। अगस्त 2021 में ही चंडीगढ–दिल्ली रोड देश का पहला इलेक्ट्रिक वाहन हाईवे बन गया है जिस पर 250 किमी. की दूरी पर 19 चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए गए हैं। इस हाईवे पर करनाल लेक रिजॉर्ट्स में देश का पहला सौर ऊर्जा चालित चार्जिंग स्टेशन स्थापित कर आरंभ किया गया। भारत सरकार ने केंद्र सरकार के उपक्रमों को भी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने का दायित्व सौंपा है। जिसके तहत निम्न उपक्रमों ने देश के विभिन्न राज्यों में चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए हैं।

एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लि. (EESL)	147
एनटीपीसी लि. (NTPC)	100
पावर ग्रिड कारपोरेशन आफ इंडिया लि. (PGCIL)	17
इण्डियन आयल कारपोरेशन लि. (IOC)	125
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लि. (HPCL)	40
भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लि. (BPCL)	08

सरकार की विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के बावजूद इलेक्ट्रिक व्हीकल समाज में आशानुरूप लोकप्रिय नहीं हो पा रहे हैं। लोग इलेक्ट्रिक व्हीकल खरीदना तो चाहते हैं किन्तु अभी निम्नलिखित कुछ कारक हैं जो इलेक्ट्रिक व्हीकल उपयोग को सामान्य जनमानस तक पहुंचने में बाधक हैं :–

1. **इलेक्ट्रिक वाहन की अधिक प्रारंभिक लागत :** भारत में लीथियम की कमी के कारण बैटरी सेल का आयात करना पड़ता है, जिससे बैटरी की लागत बढ़ जाती है और परिणामस्वरूप इलेक्ट्रिक व्हीकल की लागत बढ़ जाती है।

2. **उपलब्ध इलेक्ट्रिक व्हीकल की कम रेंज:** अभी तक प्रचलित वाहनों में रेंज 140–150 किमी. तक ही है, जो इलेक्ट्रिक व्हीकल से लंबी दूरी तक यात्रा करने में बाधक है और यह हर 140–150 किमी. पर बारंबार चार्जिंग की अनिवार्यता के कारण लोकप्रिय नहीं है। यद्यपि शोधों/नवाचारों से कुछ वाहन निर्माता 400–500 किमी. रेंज तक का भी दावा करते हैं, लेकिन इन वाहनों की ऊंची लागत के कारण इनके प्रचलन में आने में समय लग सकता है।

3. **चार्जिंग के बुनियादी ढ़ांचे की कमी:** सरकार की प्रोत्साहन योजनाओं के बावजूद अभी चार्जिंग स्टेशन बड़े शहरों में ही उपलब्ध है। छोटे शहरों/ग्रामीण क्षेत्रों में चार्जिंग स्टेशनों की अनुपलब्धता इनकी लोकप्रियता और सर्वविद्यमानता में बाधक हो रही है। ग्राहक चाहकर भी इलेक्ट्रिक व्हीकल नहीं खरीद पा रहे हैं। कुछ समय पश्चात चार्जिंग के बुनियादी ढ़ांचे में अभिष्ठ प्राप्त होने पर इच्छुक ग्राहक इलेक्ट्रिक व्हीकल खरीदने की ओर अग्रसर हो पाएंगे।

4. **अक्षय ऊर्जा और ग्रिड के बुनियादी ढ़ांचे की कमी:** इलेक्ट्रिक व्हीकल अपने पर्यावरणीय अभिष्ठ को तभी प्राप्त कर पाएंगे, जब इनकी चार्जिंग में मात्र नवीकरणीय ऊर्जा का ही उपयोग होगा अन्यथा वर्तमान परिस्थितियों में जहां देश भर में 61% विद्युत की आपूर्ति कोयले पर आधारित विद्युत उत्पादन से होती है, वहां इस विद्युत से इलेक्ट्रिक व्हीकल की चार्जिंग से इन वाहनों के पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में उद्देश्यों का निष्प्रभावी होना सुनिश्चित है।

5. **बैटरी के चार्जिंग साइकल:** अभी तक उपलब्ध वाहनों की लीथियम–आयन बैटरी को दो हजार बार तक ही चार्ज

किया जा सकता है। ऊंची प्रारम्भिक लागत के कारण दो हजार बार तक की ही चार्जिंग वाहन की उपयोग लागत में वृद्वि करता है और सीधे–सीधे बैटरी के जीवन काल को प्रभावित करता है। भविष्य में शोधों/वैकल्पिक तकनीकों से चार्जिंग साइकल बढ़ने से वाहन की प्रभावी लागत में कमी अवश्य आएगी।

पर्यावरण प्रदूषण कम करने, रोजगार के अवसर उत्पन्न करने तथा नए वाहनों की मांग बढ़ाने के साथ औद्योगिकीकरण में वृद्धि के उद्देश्य से भारत सरकार भी विश्व के अनेक देशों की भांति शीघ्र ही "वाहन स्क्रेप पॉलिसी" लागू करने जा रही है। इस पॉलिसी के लागू हो जाने से तय उम्र सीमा पूर्ण कर देने के बाद वाहनों के परीक्षण मानकों पर खरा न उतरने वाले वाहनों को स्क्रेप किया जाना अनिवार्य होगा। इस नीति को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ''स्क्रेप प्रमाण पत्र'' प्रस्तुत करने पर नए वाहनों की खरीद पर अनेकों प्रोत्साहन योजनाएं लागू करने जा रही है। यह सर्कुलर इकॉनामी की ओर भारत सरकार का महत्वपूर्ण कदम होगा, जिससे EVs की मांग में बढ़ोतरी की संभावना है। अतः भविष्य पर्यावरण मित्र इलेक्ट्रिक वाहन का ही है।

22 मार्च–विश्व जल दिवस

लेख

के.जे.घिल्डियाल
उप प्रबंधक (वित्त), टिहरी

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने टिहरी बांध का निर्माण दो नदियों भागीरथी और भिलंगना के नजदीक रॉकफिल बांध बनाकर किया है। वर्तमान में टिहरी कॉम्प्लेक्स से 1000 मेगावाट एवं कोटेश्वर से 400 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश को सिंचाई के लिए भरपूर जल उपलब्ध करवाया जा रहा है। जैसा कि सर्वविदित है, सर्दियों में नदी का जलस्तर न्यूनतम होता है तो टिहरी बांध से अब सर्दियों में भी लगभग 400 क्यूसेक जल बराबर छोड़ा जाता है जिससे उत्तर प्रदेश की नहरें वर्ष भर लबालब रहती है एवं खेतों में सिंचाई के लिए जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है। बात यहीं खत्म नही होती, धार्मिक मेले जैसे कुम्भ इत्यादि में भी गंगा नदी में भरपूर जल रहता है जिसमें श्रद्धालु जी भरकर डुबकी लगाते हैं। वर्ष 2006 से पूर्व कई मित्र जो इलाहाबाद प्रयागराज के हैं, वे तंज कसते थे कि कुम्भ स्नान पहले नदी में छाती के बल लेटकर और फिर पीठ के बल लेटकर किया जाता रहा किन्तु टिहरी बांध के निर्माण एवं बयालीस वर्ग किलोमीटर के विशाल जलाशय की बदौलत अब सभी घाटों पर प्रचुर मात्रा में गंगाजल उपलब्ध रहता है। कुल मिलाकर जल संरक्षण एवं भंडारण मानव हित में है। टिहरी बांध के कारण विस्थापित हुए सभी परिवारों का यह बलिदान आने वाली पीढ़ी के लिए एक इतिहास बनेगा।

सोमनाथ

लेख

आल्हा सिंह
अपर महाप्रबंधक (प्रभारी), पवन विद्युत परियोजना, द्वारका

भारत वर्ष के पश्चिमी छोर पर स्थित गुजरात में अरब सागर के किनारे पर स्थित अत्यंत प्राचीन व ऐतिहासिक शिव मंदिर है। यह शिवजी के 12 ज्योतिर्लिंगों में सर्वप्रथम ज्योतिर्लिंग है। सौराष्ट्र क्षेत्र में वेरावल बंदरगाह में स्थित इस शिव मंदिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण स्वयं चन्द्रदेव ने किया था। इसका उल्लेख ऋग्वेद में भी है।

ऐसा माना जाता है कि चन्द्र ने दक्ष प्रजापति की 27 कन्याओं से विवाह किया था लेकिन चन्द्रदेव रोहिणी नामक अपनी पत्नी पर अधिक आसक्त थे और उसे सबसे अधिक सम्मान व प्राथमिकता देते थे। अन्य पत्नियां इस बात से रूष्ट थी तथा सभी ने चन्द्रदेव के इस व्यवहार की शिकायत अपने पिता दक्ष प्रजापति से की। दक्ष प्रजापति ने चन्द्रदेव को समझाया लेकिन उनके व्यवहार में कोई अंतर नहीं पड़ा। इससे क्रोधित होकर तथा अपनी अवहेलना समझकर उन्होंने चन्द्रदेव को शाप दे दिया कि अब से हर दिन आपका तेज क्षीण होता रहेगा। फलस्वरूप हर रोज चन्द्रदेव का तेज/कांति घटने लगी, जिससे चिंतित होकर दुखी सोम/चंद्र ने भगवान शिव की आराधना की। अंततः शिव प्रसन्न हुए तथा चन्द्रदेव के शाप का निवारण किया। अतः चन्द्रदेव ने भगवान शिव के प्रतीक शिवलिंग का स्थापन यहां करवाया इस जगह को सबसे पवित्र स्थान मानकर/तबसे शिव ने चन्द्र को अपने मस्तक पर भी धारण किया तथा यहां स्थापित शिवलिंग को नाम मिला सोमनाथ। क्योंकि चन्द्र के नाथ भगवान शिव अर्थात सोमनाथ हैं । सोमनाथ दर्शन से जन्म जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। मोक्ष प्राप्ति का मार्ग मिल जाता है। यह मंदिर हिंदू धर्म के उत्थान व पतन के इतिहास का प्रतीक है। इस मंदिर को अनेक बार आततायियों/आक्रमणकारियों तथा मुगल बादशाहों ने तोड़ा है तथा तबसे हर बार इसका पुनर्निर्माण बाबा सोमनाथ के भक्तों ने उनकी कृपा से किया है। इस मंदिर के तोड़ने तथा पुनर्निर्माण का संक्षिप्त इतिहास निम्नानुसार है :–

1. सर्वप्रथम मंदिर का निर्माण प्रभास पाटन क्षेत्र में स्वयं भगवान सोम/चन्द्र ने करवाया जिसकी तिथि ज्ञात नहीं है। इस मंदिर की महिमा का वर्णन महाभारत, श्रीमद्भागवत तथा स्कंदपुराण आदि में सविस्तार दी गई है।
2. इस मंदिर का पुनर्निर्माण सन् 649 में वल्लभी के मैत्रक राजाओं ने किया । इस मंदिर का विध्वंश 725 ई. में सिंध के अरब सूबेदार अल जुनैद ने किया।
3. अल जुनैद के द्वारा मंदिर का विध्वंश होने पर इसका पुनर्निर्माण 815 ई. में कन्नौज के प्रतिहार नरेश नागभट्ट ने किया। कन्नौज इस समय बहुत शक्तिशाली राज्य था तथा इसकी सीमाएं पश्चिम में सिंध से पूर्व में बंगाल के राजा धर्मपाल से तथा दक्षिण में नर्मदा से मिलती थी। नागभट्ट ने अरब आक्रमणकारियों को हराकर भारत को उनके आतंक से मुक्ति दिलाई तथा सनातन धर्म व तीर्थों की मर्यादा रखी।

4. नागभट्ट निर्मित सोमनाथ मंदिर का विध्वंश गजनी के सुल्तान महमूद गजनवी ने 1025 में अपने गुजरात आक्रमण में किया। परमार व चालुक्य क्षत्रियों की बहुत कोशिशों के बाद भी मंदिर को उसके आक्रमण से न बचाया जा सका। तीन दिन के भीषण युद्ध के बाद गजनवी मंदिर से शिवलिंग को तोड़ने में सफल रहा। चालुक्य नरेश भीमदेव–प्रथम घायल होकर छुप गए तथा पंडे पुजारी और शिवभक्तों का मंदिर के अंदर ही कत्ल कर दिया गया तथा अनेकों लोग दास दासी बनाकर गजनी ले जाए गए। इसने गजनी में 'मीनारे दो दीवार' बनवाई तथा यहां पर भारत से पकड़े गये दास–दासियों की कीमत 2 दिनार लगाकर खरीद बेच हुई। यह शिवलिंग को तोड़कर अकूत धनराशि हीरे जवाहरात स्वर्ण मुद्रा आदि लेकर गया।

5. गुजरात नरेश भीमदेव प्रथम व धारा नगरी के परमार राजा भोज ने इस ध्वस्त मंदिर का पुनः निर्माण कराया और भगवान सोमनाथ जो राजा भीमदेव प्रथम के शरीर में प्रवेश कर गए थे। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय पुनः स्थापित किए गए। 1093 में भीमदेव प्रथम के पौत्र महाराज जयसिंह सिद्धिराज ने इसकी मरम्मत करवाई तथा व्यवस्था सुधारी। 1168 में जैनी महाराजा कुमारवाल ने जो कि भीमदेव प्रथम का ही पौत्र था और सिद्धिराज जय सिंह का उत्तराधिकारी था, ने भी इस मंदिर का सौन्दर्यीकरण करवाया तथा सुव्यवस्था स्थापित की।

6. इस मंदिर का विध्वंस 1297 में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति नुसरत खान ने अपने गुजरात अभियान में किया। उसने यहां से अकूत धनराशि लूटी तथा दिल्ली ले गया। फिर हिन्दू राजा (चूड़ासामा) ने इस मंदिर का पुनः निर्माण करवाया ।

7. चूड़ासामा राजाओं द्वारा निर्मित मंदिर का विध्वंस 1395 में गुजरात सल्तनत के सुल्तान मुजफ्फर शाह ने किया। 1412 में उसके पुत्र अहमद शाह ने भी इस मंदिर पर आक्रमण कर लूट की तथा पूजा पाठ बंद करवा दिया। अब गुजरात मुस्लिम सुल्तानों की रियासत था ।

8. ओरंगजेब ने इस मंदिर पर दो बार आक्रमण किया। पहला 1665 में तथा दूसरा 1706 में। मंदिर पर आक्रमण होते रहे । मंदिर को तोड़ा जाता रहा और मूर्ति खंडित की जाती रही लेकिन रूक–रूक कर हिन्दू बार–बार लिंग स्थापित कर पूजा करते रहे। औरंगजेब द्वारा ध्वस्त मंदिर पर 1783 में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने भव्य मंदिर का निर्माण करवाया जो अब भी स्थापित है तथा यहां पर विधिवत पूजा हो रही है।

भारत की आजादी के बाद सरदार बल्लभ भाई पटेल ने जूनागढ़ रियासत के भारत में विलय के बाद मंदिर का निर्माण करवाया। इस मंदिर का निर्माण जनता के धन से महात्मा गांधी की अनुमति से ट्रस्ट बनाकर शुरू किया गया तथा इसके सूत्रधार सर्व श्री सरदार पटेल, के.एम. मुंशी तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे। 1995 में मंदिर भारत के राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा ने राष्ट्र को समर्पित किया। यह मंदिर गर्भग्रह सभामंडप तथा नृत्यमंडप 3 भागों में विभाजित है। इसका शिखर 150 फुट ऊंचा है। शिखर पर स्थित कलश का भार 10 टन है तथा ध्वजा 27 फुट ऊंची हैं। यह मंदिर कैलाश महामेख प्रसाद शैली में बनाया गया है। सौराष्ट्र के पूर्व राजा दिग्विजय सिंह ने 1950 में मंदिर की आधारशिला रखी। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 1951 में ज्योतिर्लिंग स्थापित किया। भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी देह त्याग भी प्रभास पाटन क्षेत्र में इस मंदिर के समीप ही किया था। यह स्थान भिल्लिका तीर्थ कहलाता है। जरा नामक व्याध ने भगवान श्रीकृष्ण के पैर में स्थित पद्म में तीर मारकर उनकी जीवन लीला खत्म की थी।

वाण स्तम्भ– मंदिर के दक्षिण में समुद्र के किनारे एक स्तम्भ है जिस पर एक तीर से संकेत हैं कि सोमनाथ मंदिर व दक्षिण ध्रुव के मध्य इस तीर की दिशा में कोई भूभाग स्थित नहीं है। मंदिर के पृष्ठ भाग में प्राचीन मंदिर स्थित है जिसे माता पार्वती का मंदिर कहा जाता है।

जब एक कवि, लेखक व शायर से हुई अचानक भेंट

लेख

नीलम चमोली,
शिक्षिका एवं समाज सेविका, पत्नी श्री राजेश चमोली,
वरि. प्रबंधक, ऋषिकेश

बीते कुछ दिन पूर्व 27 फरवरी 2022 (रविवार) को अपनी एक मित्र से मिलने देहरादून जाना हुआ। मुलाकात के बाद जब हम वापस आने लगे तो आंगन में धूप सेक रहे बुजुर्ग जो कि मेरी मित्र के ससुर जी थे, ने आग्रह किया कि कुछ देर हमारे पास भी तो बैठो। हम उनके पास बैठे और बातचीत का सिलसिला जारी हो गया। बातचीत के दौरान मैं उनके जोशीले शेर व जोरदार जुमले कहने के अंदाज से प्रभावित हुए बिना रह न सकी और अचानक पूछ बैठी कि क्या आप एक लेखक हैं ? उन्होंने उत्साह से मुस्कुराते हुए जोशीले अंदाज में कहा, हां, मैं एक लेखक, कवि और शायर हूं और अपना परिचय देते हुए बताया कि "हां, मैं ही कुंवर देहरादूनी हूं"।

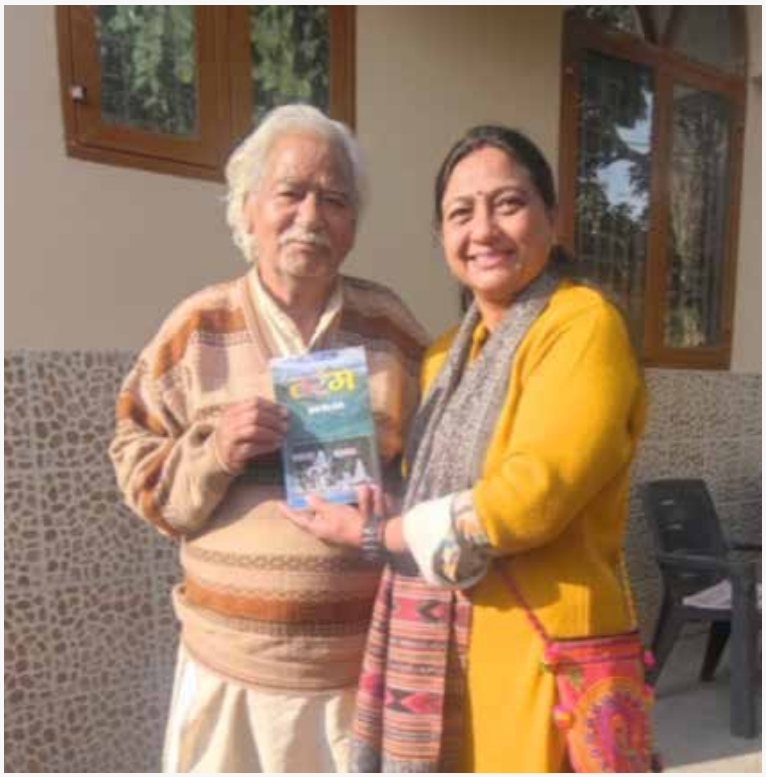

मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नही था क्योंकि मैंने कुंवर देहरादूनी के बारे में सुना हुआ था। लेकिन भेंट का ये प्रथम अवसर था और इस प्रकार अचानक भेंट होगी ये विश्वास तो कतई नही था। कुंवर सिंह नेगी उर्फ कुंवर देहरादूनी द्वारा कई पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से एक है "तरंग"। जो कि उनके द्वारा मुझे भी भेंट की गई।

उन्होंने बताया कि इस पुस्तक का गढ़वाली संस्करण भी जल्द ही आने वाला है। सर्वे ऑफ इंडिया से सेवानिवृत्त हुए 80 वर्षीय कुंवर देहरादूनी की बातें बहुत ही सकारात्मक, जोश और उत्साह से भरी थी। अभी हाल ही में कोरोना काल में अपने जवान बेटे (स्व. श्री यशपाल सिंह नेगी, प्लानिंग विभाग, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी) को खो देने के बाद भी उन्होंने उस दर्द को सीने में दबाए रखा और किसी भी कीमत पर माहौल को गमगीन नही होने दिया।

उनकी खुशमिजाजी और जिंदादिली हमें वहां से आने नहीं दे रही थी, साथ ही उन्हें अच्छे श्रोता मिले थे तो वो हमें छोडना भी नही चाहते थे। फिर भी उन्होंने हमें दाल–भात की दावत का निमंत्रण देकर और फिर से आने का वादा लेकर वहां से विदा किया। हमारे कवि, लेखक हमारी संस्कृति के संवाहक व संरक्षक होते हैं। हमारी धरोहर होते हैं। ऐसे ही उम्दा लेखक व कवि कुंवर देहरदूनी जी भी खूब लिखे, लिखते रहे ताकि उत्तराखंड की संस्कृति का देश और दुनिया में अधिक से अधिक प्रसार–प्रचार हो सके। आपके लेखन व जिंदादिल और हँसमुख अंदाज को मैं नमन करती हूं ।

"जय उत्तराखंड–जय भारत"

कबीर – एक समाज सुधारक

लेख

हरीश चन्द्र उपाध्याय
वरि. प्रबंधक (जी एंड जी) ऋषिकेश

कबीरदास का जन्म सन् 1398 ई. में काशी में हुआ। ऐसी मान्यता है कि उन्हें एक विधवा ब्राह्मणी ने जन्म दिया और लोकलाज से बचने के लिए लहरतारा नामक तालाब के किनारे रख दिया। नीरू और नीमा नामक मुस्लिम दंपत्ति ने उनका पालन–पोषण किया। परंतु आज तक कबीर दास जी के जन्म के संबंध में पुख्ता प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं। फिर भी अग्रलिखित दोहों से काफी जानकारी मिल जाती है :–

जना विधवा ब्राह्मणी ने था, काशी शर में त्याग दिया।
तंतुवाय नीरू नीमा ने, पालन कबीरादास किया।
रामानन्द के परम शिष्य थे, जाती पाति का भेद मिटाया।
पंचमेल भाषा खिचड़ी लिख, निराकार प्रभु रूप दिखाया।

उक्त दोहे को पढ़कर कबीरदास जी के जीवन का पता लगता है। कबीर के जन्म के संबंध में एक और दोहा है जिससे यह मालूम होता है कि वे संवत 1456 ई. को जेठ के महीने में पूर्णमासी को पैदा हुए थे।

चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार इक ठाठ ठए।
जेठ सऊदी बरसायत को, पूर्णमासी प्रगत हुए।

कबीर दास जी की मृत्यु के संबंध में निम्न दोहा प्रचलित है जिससे पता चलता है कि कबीर दास जी सामाजिक भ्रांति मिटाने के लिए कितने प्रयासरत थे क्योंकि लोगों का कहना था कि काशी में मरने से स्वर्ग तथा मगहर में मरने से नरक मिलता है। इस कारण कबीर काशी छोड़कर अपने जीवन के अंत समय में मगहर के लिए चले गए थे। कबीर आडंबर के खिलाफ थे तथा वे किसी धर्म को नहीं मानते थे। वे निराकार प्रभु को मानते थे –

संवत पद्रह सौ पिचहतर, कियो मगहर को गौन।
माघ सुदी एकादशी, कियो पवन में पवन।

कबीर की भाषा पंचमेल खिचड़ी थी। उनकी रचनाएं उनका प्रमुख ग्रंथ बीजक है। महान कवि कबीरदास जी ने अपनी रचनाओं में बेहद स्पष्ट तरीके से धर्म, भारतीय संस्कृति और जीवन से जुड़े कई अहम मुद्दों पर अपनी राय रखी है। उनकी रचनाएं बेहद आसान भाषा में लिखी गईं हैं, जिसमें सहजता का भाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं– सबद,साखी, रमैनी, भक्ति के अंग, कबीर की वाणी, राम सार, उग्र गीता, अलिफ नाफा, कथनी, ज्ञान गुदड़ी, ज्ञान सागर, करम, चाणंक, राम सार, रेखता, कबीरज अष्टक, बलख की फैज, रेखता आदि प्रमुख हैं। उनकी अन्य कृतियां अनुराग सागर, साखी ग्रंथ, शब्दावली, कबीर ग्रंथावली हैं ।

समाज के प्रति सोच

कबीर सभी को परमात्मा की संतान मानते थे और सबको बराबर दृष्टि से देखते थे उन्होंने कभी भी हिन्दू और मुसलमान के बीच भेदभाव नहीं किया तथा उन्होंने आडंबर का हमेशा विरोध किया। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों पर अपने दोहों के माध्यम से तंज कसे। उन्होंने अपने दोहों में धार्मिक कट्रता का विरोध खुलकर विरोध किया :–

काकड़ पाथर जोड़ के मस्जिद लियो चुनाए।
ता चढ़ी मुल्ला बांगह दे क्या बहीरा हुआ खुदाय।।

पाहन पूजे हरी मिले, तो मैं पूजों पहाड़ ।
ते चाकी ताकि भली, पीस खाय संसार ।।

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल ।
जो नर बकरी खात है, ताको कौन हवाल ।।

संत कबीरदास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। वह कर्म प्रधान समाज के पैरोकार थे और इसकी झलक उनकी रचनाओं में साफ झलकती है। लोक कल्याण के लिए ही मानो उनका सारा जीवन था। कबीर को वास्तव में एक सच्चे विश्व–प्रेमी का अनुभव था।

कबीरदास जी निर्गुण, निराकार ब्रह्म के उपासक थे। उनकी रचनाओं में राम शब्द का प्रयोग हुआ है। निर्गुण ईश्वर की आराधना करते हुए भी कबीरदास महान समाज सुधारक माने जाते हैं। कहा जाता है कि कबीर दास जी निरक्षर थे अर्थात वे पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन वे अन्य बच्चों से एकदम अलग थे आपको बता दें कि गरीबी की वजह से उनके माता–पिता उन्हें मदरसे नहीं भेज सके। इसलिए कबीरदास जी किताबी विद्या नहीं ग्रहण कर सके।

मसि कागद छूवो नहीं, कलम गही नहिं हाथ।

कबीरदास जी के धर्म को लेकर भी कोई पुष्टि नहीं की गई है। कहा जाता है कि ये जन्म से ही मुसलमान थे तथा जब वे स्वामी रामानंद के प्रभाव में आए तब उन्हें हिन्दू धर्म का ज्ञान हुआ था। इसके बाद उन्होंने रामानंद को अपना गुरु बना लिया। दरअसल एक बार कबीरदास पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर पड़े। उसी समय स्वामी रामानंद जी गंगा स्नान करने के लिए सीढ़ियों से उतर रहे थे, तभी उनका पैर जाकर कबीरदास जी के शरीर पर पड़ गया जिसके बाद कबीरदास के मुंह से 'राम–राम' शब्द निकला। फिर क्या था उसी राम को कबीरदास जी ने अपना दीक्षा मंत्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया। इसके बाद कबीर दास ने कहा कि –

'हम कासी में प्रकट भये हैं, रामानन्द चेताये'।

संत कबीरदास जी किसी धर्म को नहीं मानते थे बल्कि वे सभी धर्मों की अच्छे विचारों को आत्मसात करते थे। यही वजह है कि कबीरदास जी ने हिंदु–मुसलमान का भेदभाव मिटा कर हिंदू–संतों और मुसलमान फकीरों के साथ सत्संग किया और दोनों धर्मों से अच्छे–अच्छे विचारों को ग्रहण कर लिया।

कबीरदास जी ने हमेशा समाज में व्याप्त कुरुतियों को दूर करने की कोशिश की। बाह्य आडंबर का सदा वह विरोध करते थे। उनका जीवन एक फक्कड़ बाबा की तरह था। वह इधर–उधर घूमते रहते थे। समाज की कुरीतियों को दूर करने में सहायता करते थे। कबीर ने मानव जाति को सर्वश्रेष्ठ बताया है तथा कहा है कि इसमें कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है।

मृत्यु के नाम पत्र

व्यंग्य

सुरेश कुमार
वरिष्ठ टेक्नीशियन
टाउनशिप अनुरक्षण (सेवाएं), ऋषिकेश

ओ मेरी महबूबा । लोग तेरे नाम से इतना क्यों डरते हैं। तेरा नाम सुनकर कांपने क्यों लगते हैं। गुरु की कृपा से मैंने तुझे पहचान लिया है। तू मेरी जन्म–जन्म की साथी है। आह! तू कितनी प्यारी है। संसार में आज तक मुझे जितने लोग मिले हैं, या आगे भी मिलेंगे मैं उनमें से किसी को भी नहीं जानता । मैं यह भी नहीं जानता कि वे मुझे पिछले जन्मों में मिले थे या नहीं। किंतु तेरा साथ जन्म–जन्म का है। हर जन्म में तू निश्चित रूप से मुझे मिलती रही है।

शादी से पूर्व संसार में स्थूल महबूबा की जितनी इंतजार होती है, उससे कहीं ज्यादा आतुरता से मैं तुमसे मिलने का इच्छुक हूं, क्योंकि शारीरिक शिथिलता, दुर्बलता, कमजोरी में अपने सगे भी साथ छोड़ देते हैं और कद्र करना कम कर देते हैं। तब हमें तू याद आती है।

ओ प्रियतम ! संसार में यदि तू न होती तो यह जीवन नरक बन जाता। कल्पना करिए, यदि किसी धर्मशाला में से कोई यात्री ठहरने के लिए आए और फिर जाए ही नहीं अथवा रेल के डिब्बे में जो यात्री चढ़े, वे कभी उतरे ही नहीं, तो वह धर्मशाला या रेल का डिब्बा नरक ही बन जाएगा।

शायद इसी का नाम दुनिया है। कोई आ रहा है, कोई जा रहा है। ओ मेरी महबूबा ! चौरासी लाख बार तूने मुझे अपने पाश में लिया और हर बार मेरी कायाकल्प कर दी। हर बार मुझे नया जीवन दिया। इस दुनिया में इतना अधिक मेहरबान सच्चा साथी और कौन है? तू कितनी कृपालु है, तू नहीं मिलती है तो लोग गऊ दान व अन्य दान करने में लग जाते हैं। तू कितनी कृपालु है। तेरा मिलना कितना सुखद है, कैसे बताऊं?

जीवन में त्याग और वैराग्य के कितने भाषण सुने और दिए, परंतु तू कितनी सच्ची है, तू त्याग वैराग्य और ज्ञान की साक्षात मूर्ति है, तू धन्य है। तेरी पहचान न होने के कारण ही तुझसे लोग डरते है, तुझ पर झूठे इल्जाम लगाते हैं, तुझे विनाश का नाम देते हैं। नष्ट तो इस संसार में कुछ होता ही नहीं, तू विनाश नहीं नया जीवन देने वाली है। तुझसे मिलना कितना सुखद है। तुझसे बढ़कर न्यायकारी कौन होगा ? एकदम दूध का दूध और पानी का पानी कर देती है।

हे सुखदायिनी ! मुझे शक्ति दे, तेरे दर्शनों का मैं पूर्ण आनंद ले सकूं, तेरा दर्शन मात्र झूठ का अंत है। ऐ मेरी जन्म –जन्म की साथी तू प्रभु का रूप है। संसार में एक तू ही तो है जो अंश को अंशी से पूर्णतः मिलाने की शक्ति रखती है। ऐ मृत्यु तू अमर है। मेरा सौभाग्य है कि तुझसे मिलकर मैं भी अमर हो जाऊंगा। जहां शब्द खत्म हो जाते हैं वहां तेरी भाषा शुरू हो जाती है। तेरी प्रतीक्षा में आतुर मेरा हृदय बार–बार पुकारता है कि तेरा हार्दिक स्वागत है।

चन्देरी

दर्शनीय

रीतिका अग्निहोत्री
ए –305, ओ. सी. आर. बिल्डिंग,
विधान सभा मार्ग, लखनऊ –226001

मालवा का प्रवेशद्वार चन्देरी अपनी शानदार खूबसूरती, धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। प्रकृति ने भी चन्देरी पर बहुत मेहरबानी की है। विन्ध्यपर्वत श्रृंखला के चन्द्राकार पर्वतों की गोद में आबाद चन्देरी से रूबरू होने के लिए दिल्ली–मुम्बई रेलमार्ग के ललितपुर रेलवे स्टेशन से सड़क मार्ग से 33 किमी. दूरी का सफर करके पहुँचना सरल है। चन्देरी के नामकरण पर इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ इतिहासकार चेदि राज्य के नाम पर नगर का नाम मानते है, तो कुछ पर्वत के नाम पर। वर्तमान चन्देरी प्रतिहार वंश के प्रतापी राजा कीर्तिपाल की ऋणी है। बूढ़ी चन्देरी के स्थान पर नई चन्देरी को 11वीं शताब्दी में बसाया गया था, लेकिन बूढ़ी चन्देरी को क्यों बिसारा गया, यह रहस्य ही है। प्राचीन नगरी पर गुप्तवंश, प्रतिहारवंश, गुलामवंश, तुगलकवंश, खिलजीवंश, अफगानवंश, गौरीवंश, बुन्देला राजपूतों एवं सिंधियाओं ने शासन किया। वर्तमान चंदेरी नगरी को प्रतिहारवंश महाराज कीर्तिपाल कुरुमदेव ने दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी के बीच बसाया था। नगरी का विस्तार 30 मील तक का था। मुगलकाल में इसकी जनसंख्या 1 लाख 75 हजार बताई गई है, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी उत्तर–पश्चिम में बूढ़ी चंदेरी, हंसारी, दक्षिण पूर्व में बेंहटी, बारी, तपाई, पंचमनगर, दक्षिण–पश्चिम में थूवोनजी, सीतामढ़ी, ख्यावदा, बीठला, भियांदात आदि है। इस समूचे क्षेत्र में पुरातत्व महत्व की विपुल सामग्री यत्र–तत्र बिखरी हुई है। राजवंशों के कार्यकाल में अनेकों उत्कृष्ट श्रेणी के निर्माण कार्य हुए है जो स्थापत्य कला के अनूठे प्रमाण हैं शिलालेखों से पता चला है कि यहाँ स्थापत्य कला खजुराहों से पूर्व की है। चंदेरी नगरी के अनेकों नयनाभिराम मंदिर, मस्जिद, मठ, सराय, मीनारें, मकबरे, बावड़ियाँ, मेहमानखाने, महल एवं किला आदि उल्लेखनीय है। यह नगरी 7 परकोटों के बीच बसी हुई थी, जिनमें अनेकों प्रवेशद्वार थे। मुख्य दरवाजों के नाम पर इस प्रकार है– दिल्ली दरवाजा, ढोलिया दरवाजा, खिड़की दरवाजा, पखन दरवाजा, पिछारे दरवाजा, रेतबाग का दरवाजा, बिना नींव का दरवाजा, बादल महल का दरवाजा, जौहरी दरवाजा एवं कटी घाटी दरवाजा।

स्थापत्य कला बेजोड़ स्थल 'कीर्ति दुर्ग' साक्षी है इतिहास के उस काल खण्ड का जब चन्देरी मुगलों के रक्तपात की शिकार बनी। प्रतिहार वंश के पतन के बाद चन्देरी मुगलों के रक्तपात की शिकार बनी। प्रतिहार वंश के पतन के बाद चन्देरी मालवा राज्य के अधीन रही। इस शासन काल में कौशक महल, पुराना मदरसा, बत्तीसी बावड़ी, शहजादी का रोजा, दिल्ली दरवाजा, बादल महल आदि स्थापत्य के निर्माण को आकार मिला। चन्देरी राज्य का मुख्य प्रवेश द्वार खूनी दरवाजा कहलाता है। मुगल शैली में निर्मित यह द्वार राजा मेदनीराय की वीरगति का साक्षी है। 28 जनवरी सन् 1528 को बाबर ने पहाड़ों को काटकर हमला किया था। यह स्थल कटी घाटी के नाम से प्रसिद्ध है। यह युद्ध के सन्दर्भ में बाबर द्वारा लिखित पुस्तक ''तुजक–ए–बाबरी'' के अनुसार दिसंबर, 1527 में बाबर ने चन्देरी में प्रवेश का मार्ग उत्तर दिशा से चुना और अपनी सेना का शिविर बत्तीसी बावड़ी पर स्थापित कर जनवरी, 1528 में युद्ध के नगाड़े बजा दिए। बाबर ने चन्देरी के चारों ओर से घेर लिया। राजपूतों ने दुर्ग बचाने के लिए भीषण प्रतिरोध किया, लेकिन विजय बाबर को मिली तो हजारों क्षत्राणी वीरांगनाओं ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए विक्रम संवत् 1584, माघ सुदी 8, बुधवार को किले में ही एक तालाब के किनारे जौहर किया। इस जौहर में मेदनीराय की पत्नी मणिमाला तथा उनकी सहेली ने भी अपने आपको शामिल किया। यह जौहर अपने आप में तत्कालीन राजाओं के चरित्र को इंगित करता है। इस स्थल पर एक स्तम्भ बना है। इसके निर्माण में ग्वालियर राज्य ने सहयोग किया था। स्तम्भ पर सुरुचिपूर्ण ढंग से

जौहर के दृश्य के अतिरिक्त स्वर्ग में शिवपूजन का दृश्य अंकित है। इसी पहाड़ी पर किला कोठी है, जिसका संचालन लोक निर्माण विभाग के अधीन है।

संगीत सम्राट 'बैजू बावरा' की समाधि एकांत में अपनी उपेक्षा पर आँसू बहा रही है। नौ खड़ा महल कभी चन्देरी राज्य का सबसे सुन्दर महल था। आज खण्ड–खण्ड हो चुका है। स्मृति शेष पाषाण खण्ड अपने अतीत के सुनहरे दिनों को ताजा किये है।

प्राचीन काल में चेदि राज्य पर राजा शिशुपाल का शासन था। इस राज्य के अवशेष मात्र ही शेष है। लोकश्रुति के अनुसार राजा शिशुपाल ने, जो भगवान कृष्ण से ईर्ष्या रखता था, अपने राज्य में प्रजा को मोर मुकुट के आकार युक्त जूते पहनवाये, जो यदाकदा ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्रचलित है।

चन्देरी नगर दो विशाल परकोटों के बीच घिरा है, लेकिन अब पराकोटे जगह–जगह से क्षतिग्रस्त हो रहे है। यहाँ के बाशिंदों ने इसे नोच–नोच कर अपना बसेरा बना डाला है, तो कहीं दुकाने बन गयी हैं, जो आगन्तुकों को चिढ़ा रही हैं। यहाँ के चप्पे–चप्पे में बिखरा असीम सौन्दर्य शिल्प कला के अनूठे रूप में दस्तक दे रहा है। चन्देरी में वैसे तो अनेक तालाब हैं, लेकिन 'परमेश्वर तालाब' का विशेष महत्व है। इसके घाट पर बना लक्ष्मण मन्दिर का प्रतिबिम्ब अपनी अनोखी आभा प्रस्तुत करता है।

दर्शनीय स्थल

चंदेरी का किला– ग्यारहवीं शताब्दी में कीर्ति पाल द्वारा निर्मित चार मील से अधिक लम्बी चंदेरी की दीवार, चंदेरी के इतिहास की मूक साक्षी है। परकोटे के अंदर बुन्देलखण्ड स्थापत्य के नौखड़ा महल और हवा महल दर्शनीय है। चंदेरी किले में चंदेरी नगर ओर उसके आसपास का दृश्य मनमोहक है।

जागेश्वरी देवी मंदिरः– यह प्राचीन मंदिर पर्वत की एक खुली गुफा में स्थित है इसकी मूर्ति स्वयंभू है। यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा ही मनोरम और हृदयग्राही है, यहाँ अनवरत गति से झरने झरते है। यह एक सिद्धपीठ है जिसके दर्शन से आत्मा को शांति मिलती है। भगवती माँ जागेश्वरी का मन्दिर आने वाले पर्यटकों का आकर्षक केन्द्र बना है। लोकश्रुति के अनुसार माँ जागेश्वरी ने यहाँ के राजा को स्वप्न में कहा था कि मुझे नौ दिन नहीं देखा तो मैं पूर्ण रूप में प्रकट हो सकती हूँ। दर्शन की तीव्रता के कारण तीसरे दिन द्वार खोलने के कारण सिर्फ शीर्ष भाग ही मिला, जो मन्दिर में स्थापित है। मन्दिर के पास बना आकर्षित करता तालाब चन्देल कालीन कला का अनुपम उदाहरण है।

बूढ़ी चंदेरीः– मौजूदा चंदेरी से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित यहाँ 55 जैन मंदिरों के अवशेष मिलते है।

थूबोन जीः– चंदेरी से 28 कि.मी. की दूरी पर स्थित यहाँ दिगम्बर जैन समाज के 16 जैन मंदिर है। निकट ही थूबोन नाम का एक ग्राम है जहाँ भारतीय पुरातत्व विभाग का मूर्ति संग्रहालय तथा इसके आसपास दसवीं शताब्दी के अनेक जैन, हिन्दू मंदिर उल्लेखनीय है।

बैंहटी मठः– चंदेरी से 18 मि.मी. की दूरी पर दक्षिण–पूर्व दिशा में घने जंगलों के बीच स्थित यह मठ गुप्तकाल में तांत्रिकों की साधनास्थली रहा है। इसके 16 स्तम्भों को पत्थर की बारीक कटाई से शेर, हाथी, मोर, घोड़े, हिरण, कमल के फूल एवं देवी देवताओं से सुसज्जित किया गया है।

देवी प्रतिमाः– चंदेरी से 12 कि.मी. दूर वेदी की एक विलक्षण प्रतिमा है जो अत्यन्त प्राचीन एवं मनमोहक है।

खंदारगिरि– यह स्थल चंदेरी से 2 कि.मी. की दूरी पर दक्षिणांचल में है, तथा यहाँ 13 वीं शताब्दी से लेकर 16वीं शताब्दी तक की विशाल और भीमकाय शैल प्रतिमाएं बनी हुई है।

हज़रत शाह बजीहउद्दीन का मकबराः– ख्वाजा मखदूमशाह विलायत के नाम से प्रसिद्ध यह मकबरा 13 वीं शताब्दी का है। हजरत शाह वजीहउद्दीन यूसुफ भारतवर्ष के प्रसिद्ध सूफी संत हजरत निजामुउद्दीन औलिया के निकटतम शिष्य एवं खलीफा रहे है, जो अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में चंदेरी आए थे। यहाँ प्रतिवर्ष 27 से 29 मार्च को उर्स भरता है।

जामा मस्जिदः– चंदेरी नगर के मध्य में मुंगावली रोड पर स्थित जामा मस्जिद के 3 विशाल गुम्बद पर्यटकों को दूर से ही आकर्षित करने लगते हैं। निर्माण गयासुद्दीन बलवन ने 1252 ई. में मालवा की जीत की खुशी में कराया था। बलवन शमसुद्दीन अल्तमश में मंत्रिमंडल में प्रमुख सदस्य था।

दिल्ली दरवाजाः– इस विशाल एवं कलात्मक द्वार का निर्माण दिलावर खाँ गौरी ने 1411 में निर्मित कराया था। इस महल के नीचे एक विशाल तालाब है जहाँ हमेशा कमल के फूल खिले रहते हैं। यह तालाब बड़ा ही रमणीक लगता है। इसका निर्माण होशंगशाह गौरी ने 1433 ई. में कराया था। सिंहपुर महल में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा स्थानीय प्रतिमाओं का एक संग्रहालय स्थापित है।

कौशक महलः– चन्देरी नगर से 4 किमी. दूर फतेहाबाद गांव के पास मालवा के सुल्तान महमूद शाह प्रथम के द्वारा निर्मित 'कौशल महल' अपने अनूठी शैली के कारण मोहित करता है। चौकोर महल के चार प्रवेश द्वार है। गलियारों ने चौपड़ की तरह चारों भागों को विभक्त किया है। इस तिमंजिले महल के झरोखे, छज्जे, बरामदे, मेहराब व खम्भे मांडू की याद ताजा करते हैं। इस महल को निर्मित करने वाले राजमिस्त्रियों ने महल पर जाने की पृथक–पृथक सीढ़ियाँ निर्मित कर विशिष्ट रूप दिया। इसी कारण यह महल अपना महत्व बनाये हुए है। यह विशाल महल वर्गाकार अफगान शैली में बना है, तथा स्थापत्य कला का उकृष्ट नमूना है। इसका निर्माण मेहमूद खिलजी ने जौनपुर की जीत की खुशी में 1445 ई. में कराया था एवं इसका नाम कौशकेहफ्त मंज़िल रखा था।

पुराना मदरसाः– यह स्थल मध्य युगीन भारत में एक विश्वविद्यालय था, इसके प्राचार्यो की यहाँ समाधियाँ बनी हुई है। इस मकबरे पर पत्थर की बारीक कटाई सराहनीय है।

बत्तीस बावड़ीः– चंदेरी से 2 कि.मी. दूर उत्तर पश्चिमी दिशा में तत्कालीन गर्वनर शेरखां ने सुल्तान गयासुउद्दीन खिलज़ी के आदेशानुसार 1485ई. में बत्तीस बावड़ी का निर्माण कराया था। इसमें पानी का स्तर हर घाट पर बराबर रहता है। यह बाबड़ी चंदेरी की 1200 बाड़ियों में विशेष स्थान रखती है।

कटी घाटीः– यह द्वार चंदेरी से 2 कि.मी. दूर दक्षिण दिशा में 14 फुट चौड़ी पहाड़ी को काटकर बनाया गया है। इसी के निकट चट्टानों को काटकर तत्कालीन गर्वनर जिम्मन–खां–बिन शेरखां ने 1495 ई.में एक मस्जिद का भी निर्माण कराया था। इसी पहाड़ी की पूर्व दिशा में बाबर द्वारा 1528ई. में एक पहाड़ी को काटकर चंदेरी पर हमला किया गया था, जिसे कटा पहाड़ कहते हैं।

बादल महल दरवाजाः- यह दरवाजा चंदेरी के मध्य में बना हुआ है। कहा जाता है कि इस दरवाजे पर शाही मेहमानों का स्वागत किया जाता था। इसका निर्माण मांडू सुल्तानों ने 15 वीं शताब्दी में कराया था।

जौहर स्मारकः- चंदेरी के दक्षिण में चन्द्रगिरि पर्वत के ऊपर, किले के समीप जौहर स्मारक है। 1528 ई. में जब मुगल बादशाह बाबर ने महाराजा मेदनी राय को पराजित कर यह प्रसिद्ध दुर्ग छीना तो 1500 राजपूत वीरांगनाओं में अपने सतीत्व की रक्षा हेतु जीवित ही अपने को अग्नि में समर्पित कर जौहर व्रत निभाया था। यह स्मारक इस घटना की याद दिलाता है।

अन्य दर्शनीय स्थल

लक्ष्मण मंदिर, शहजादी का रोज़ा, ईदगाह, निजामुउद्दीन खानदान की कब्रे, दिगम्बर जैन पुराना मंदिर, हौजेखास, मलखान तालाब, रामनगर, म्युजियम, खिलजी सराय (अठ खंभ), सुल्तान अहमद नगर का मकबरा, चकला बावड़ी, ख्वाजा इस्माइल नागौरी का मकबरा, शाह कमाल का मकबरा, कीर्तिनारायण मंदिर, पंचमगढ़ी मस्जिद, हुक्की मस्जिद, बालाखानी मस्जिद, दिगम्बर जैन चौबीसी मंदिर, चौहरी दरवाजा, कीर्ति दुर्ग, काजियों की बावड़ी, बैजू बावरा की समाधि, तिवारी गेट आदि। चंदेरी के पास ललितपुर रोड पर जल विद्युत निर्माण केन्द्र तथा रानी लक्ष्मीबाई सागर दर्शनीय है। राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा 1975 में चन्देरी में पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना की गयी। इस संग्रहालय में 2200 मूर्तियाँ एकत्र हैं। सबसे छोटी मूर्ति 6 इंच की हैं। संग्रहालय में गुप्तकालीन तथा चन्देल कालीन शिल्प की अनुपम प्रतिमाओं से परिचित हो सकते हैं। मालिन खो की गुफाओं तक जाने के लिए सघन वन से गुजरना होता है। गोंद खिन्नी, बहेड़ा आदि के वृक्षों से गुजर कर जब हम वहाँ पहुँचते हैं, कल–कल निनाद करता झरना अपनी मीठे जल से सारी थकान दूर कर देता है।

चंदेरी साड़ियांः-

चंदेरी नगर ऐतिहासिक स्थान होने के साथ–साथ अपने हथकरधा वस्त्र उद्योग विशेषकर चंदेरी साड़ियों के लिये प्रसिद्ध हैं। चंदेरी साड़ियों के पोत में अत्यन्त बारीकी तथा उसकी बेल बूटियों की बुनाई से पूर्व परम्परा को स्थाई रखते हुए काफी विकास किया गया है। अतिरिक्त ताने के द्वारा चंदेरी साड़ी की बारीकी लगभग मकड़ी के जाले के समान होती है और उसे नयनाभिराम बनाने के लिए हल्के मनोहारी रंग प्रयुक्त किये जाते है। स्थापत्य कला के अनेक अनुपम उदाहरण चेदि राज्य के आस–पास फैले भूभाग में आज भी मौजूद हैं, जो गुप्तकालीन कला के अनुपम उदाहरण के रूप में भारतीय पुरातत्व कला में अपना अनूठा स्थान रखते है। लेकिन प्रचार–प्रसार के अभाव में इस क्षेत्र के अपूर्व सौन्दर्य का दर्शन करने के लिए कम लोग ही पहुँचते हैं। चंदेरी की यात्रा रोमांच और रहस्यमय स्थलों का दर्शन तो कराती ही है, चन्देरी की साड़ी भी यादगार तोहफे के रूप में देती है।

कैसे पहुँचे:-

वायु सेवा – ग्वालियर 259 किलोमीटर, भोपाल 258 किलोमीटर निकटवती हवाई अड्डे हैं।

रेल सेवाएं – दिल्ली, मुंबई, चेन्नई मुख्य रेल मार्ग पर निकटवर्ती रेलवे स्टेशन ललितपुर (36 कि.मी.), झांसी (124 कि. मी.), मुंगावली (38 कि.मी.), और अशोक नगर (46 कि.मी.)।

सड़क मार्ग – शिवपुरी, ग्वालियर, अशोकनगर, गुना इन्दौर, झाँसी, ललितपुर, टीकमगढ़, विदिशा, साँची, भोपाल के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है।

अनुकूल मौसम – जुलाई से मार्च।

नींद न आने पर, करें ये विशिष्ट उपाय

(तुलसी उपचार से साभार संकलित)

स्वास्थ्य परिचर्चा

नित्य नियम से कीजिये, गाजर का रस पान ।
निन्द्रा सुख की होयगी, बात धरें यह ध्यान ।।

सेब मुरब्बा खाइये, चाँदी वर्क लगाय ।
जी भर सोना होएगा, उत्तम बिमल उपाय।।

प्याज भून लें आग पर, रस लें आप निकाल ।
इक चम्मच रस पीजिये, नींद होय तत्काल ।।

तलवे मालिश मित करे, सरसों का हम तेल।
नींद नयन में आयगी कर देखें यह खेल ।।

निन्द्रा दायक है सदा, बंद गोभि का फूल।
सब्जी खाये स्वाद से, कर लें बात कबूल।।

दिव्य जायफल लाय कर, घिसो सलिल में आप।
पलकों पर इस लेपिये, नींद आयेगी आप ।।

धनिया–चीनी मेल कर चटनी लेऊ बनाय।
चटनी चाटो प्रेम से, चुपके देत सुलाय।।

दही– सौंफ–चीनी मिला, काली मिर्ची डाल ।
पी लो इसको प्रेम से, नींद होय तत्काल।।

नीबू रस में मधु मिला, दोनों एक समान।
चम्मच भर कर पीजिये, तुरंत करे कल्यान ।।

मावा मेले दूध में, कर लें गरम तमाम ।
कर देखें विधि आप यह, त्वरित मिले आराम ।।

सोने से पहले मलें, कन्धा–गरदन पीठ।
थोड़े टहले आप फिर, नींद होयगी मीठ ।।

प्रतिदिन टहले शाम को और करें व्यायाम ।
निन्द्रा होगी चैन की, हट जा रोग तमाम ।।

उष्ण सलिल से कीजिये, संध्या में स्नान ।
ताप बढ़ेगा बदन का, नींद हेतु वरदान।।

नींद न आती जब कभी, काम करें तत्काल ।
गिनती उलटी मित पढ़ें, नींद होय तत्काल ।।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	क्षेत्र	पत्राचार का अपेक्षित प्रतिशत	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	'क' क्षेत्र	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	100%
			2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	100%
			3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	65%
			4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%
		'ख' क्षेत्र	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	90%
			2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	90%
			3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%
			4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%
		'ग' क्षेत्र	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	55%
			2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र का	55%
			3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%
			4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55%

अन्य मदें

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	ग' क्षेत्र
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%

10.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13 (i)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./ निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालय का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(ii)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(iii)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों / उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही 01 बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) **सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।**		

राज्यों का वर्गीकरण–क्षेत्रवार

हिंदी बोले और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को नीचे दिए अनुसार तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है–

क–क्षेत्र	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़
ख–क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र, दादरा एवं नगर हवेली, दमन दीव
ग–क्षेत्र	आंध्र प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु, मणिपुर, मिजोरम, गोवा, कर्नाटक, जम्मू–कश्मीर, केरल, नागालैंड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, लक्षद्वीप, पांडिचेरी

सड़क

कविता

बी. पी. डोभाल
अभिलेख अधिकारी,
मुख्य अभिलेख कार्यालय, ऋषिकेश

सुना है सड़क प्रगति का प्रतीक होती है,
क्योंकि वह मन में सपनों के बीज बोती है।
जिसमें होते है सपनों के महल,
किसी के डाक्टर, इंजीनियर बनने के,
किसी के जीवन–यापन करने के,
तो किसी के अपने व लोक–मंगल के ताने–बाने के,
किसान, मंडी के लिए दौड़ता है,
व्यापारी अपने उद्योग के लिए दौड़ता है,
और श्रमिक अपनी दिहाड़ी हेतु दौड़ता है,
जिससे परिवार पलता है।
बालमन तो हिरनी सी कुलाचें भरता है,
अनेक योजनाओं में शिरकत करने की आशा करता है,
इसीलिए शायद सडक प्रगति का प्रतीक कहलाती है,
लेकिन, मेरे गाँव की सडक जो जाती तो है,
लेकिन लौट कर वापस आती नही, क्यों ?
ये प्रश्न बार–बार उठता है मन में
ऐसा क्यों होता है ?

घूंघट की ओट से कातर नजरो से देखता माँ का वह चेहरा,
जो कृतज्ञता और आस्था का सैलाब उमडाता है,
चाहता तो हूँ माँ भी साथ शहर चले मेरे,
लेकिन माँ है कि बंधी है आस्थाओं व रिश्तो से,
चिपकी है पुरखों के घर की देहरी से,
बंधी है आस्था व विश्वास के दामन से,
चिपकी है पुरखों की देहरी व आंगन से,
आँगन बिरवो से, गौशाला की गांय से,
डंडी–कॉठी से, घास और पाती से,
घास को जाती धस्यारिन सहेल,
सोचता भी हूँ, समझता भी हूँ,
माँ की सिसकियों को,
कहती है बेटा, जहां डोली में आयी थी,
वहीं से अर्थी भी निकले।

और इस वर्ष तो उस सडक को भी बहा ले गई बाढ़,
और सारे देश को दे गयी, वेदना के गहरे घाव,
पहाड की कृषि और व्यापार को कर गई उजाड़,
पहाड को दे गई कराहों व वेदनाओं के पहाड़,
अतः जिस सडक को समझे थे प्रगति का प्रतीक,
वो दे गई एक सीख,
कि सबको सहारा देना, सबको सहयोग देना,
पर, किसी के सहारे प्रगति के सपने मत देखना।
पर, किसी के सहारे प्रगति के सपने मत देखना।।

मेरी माँ

कविता

नलिनीकांत ओझा
प्रबंधक (जी एंड जी), वीपीएचईपी पीपलकोटी

तुम मान हो सम्मान हो,
मेरे अन्दर की जान हो,
तुम मम्मी, तुम खाला,
तुम ही तो माँ हो,
तुम ममता करूणा की छाँव हो,
तुम प्रत्यक्ष हो अप्रत्यक्ष हो,
तुम ही सबसे स्वच्छ हो,
तुम निस्वार्थ सेवा में दक्ष हो,
तुम ही निश्चय हो तुम ही विश्वास हो,
तुम ही जीवन में भरती आस हो,
तुम एक रौशन सवेरा हो,
दूर करती जीवन का अंधेरा हो,
तुम्हारे आँचल में बसेरा हो,
जीवन में एक उज्ज्वल सवेरा हो,
सिर पर तुम्हारा हाथ हो,
जीवन के उतार–चढ़ाव में तुम्हारा स्नेहिल आशिर्वाद हो।

कहा सुना सब रह जाता है

कविता

अजय मलिक "निंदित"
09, दुर्गा अपार्टमेंट्स, 1– गाँधी स्ट्रीट,
कानगम, तारामणि, चेन्नै–600113

कहा सुना सब रह जाता है,
जिद में जान चली जाती है।
कोई नशे में सो जाता है,
कोई ख्वाब में खो जाता है,
नींद किसी की उड़ जाती है,
जिद में जान चली जाती है।
रूठ मनाकर, कहीं सुनाकर,
भूल भटककर घर आता है,
प्यास आस की रह जाती है,
जिद में जान चली जाती है।
सूरज उगता फिर ढल जाता,
सबको उजला दिन भाता है,
फिर भी रात चली आती है,
जिद में जान चली जाती है।
प्यार यार बस तड़पाते हैं,
अपनी राह सभी जाते हैं,
दिल की चाह नहीं जाती है,
जिद में जान चली जाती है ।
कहा सुना सब रह जाता है !

न जाने ये कैसी मँझधार

कविता

अजय मलिक "निंदित"
पूर्व उप निदेशक (राजभाषा विभाग)
आई–5, गोविंदपुरम, गाजियाबाद–201013

न जाने ये कैसी मँझधार,
न डूबे, ना पहुँचे उस पार,
इक इक बूँद तरस गयी धार
क्यूँ राही ठहर गए थक हार !

जिधर देखो बस खरपतवार
महकते फूल बने हैं खार
नाड़ पर रख देते तलवार
कि दुश्मनी खूब निभाते यार !

किसी से नहीं कोई तकरार
रात दिन फिर भी होते वार
बदलते रोज–रोज रंगरेज
किसी को किसकी है दरकार!

राह चलने तक चलती प्रीत
बेसुरे लगते हैं सब गीत
कहाँ से आयी ऐसी रीत
कोई तो पल भर करे विचार!

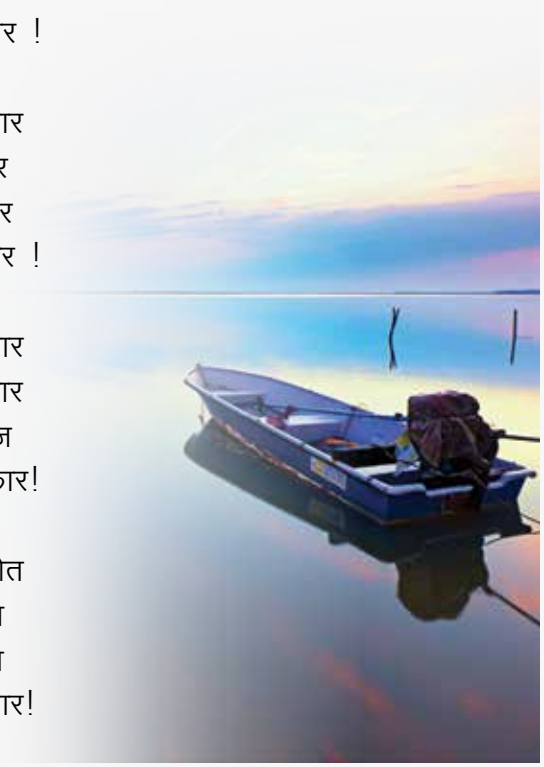

हार नहीं मानती जिंदगी

कविता

सीमा बिजल्वाण
धर्मपत्नी श्री जे.पी.बिजल्वाण
उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), टिहरी

बसंती ऋतु है, ठंडी पवन है,
फूलों के ढ़ेरो में, तितली भौंवर है,
बादल की गर्जन, बिजली की चमक है,
बारिश की रिमझिम, मिट्टी की महक है,
खुशनुमा से मौसम में खामोशियां हैं,
चंचल हवाओं की सरगोशियां हैं,
चिड़िया की चूं–चूं में, कोयल की कू–कू में,
घबराया सा मन ये क्यों डरा है,
बसंती ऋतु में ठंडी पवन में,
क्यों मेरा मन घबरा रहा है।

मेरी दुनिया माँ का आँचल

कविता

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव "कोमल"
रावगंज, कालपी, जालौन, उ.प्र.– 285204

मुझे कहीं सच में मिल जायें, अगर कहीं भगवान।
और कहें यदि माँगो मुझसे, तुम कोई वरदान ।

अच्छे कपड़े और खिलौने, जो भी चाहो ले लो ।
गुड्डे गुड़िया कार प्लेन ले, उनके सँग में खेलो ।

या फिर जो अच्छी लगती हो, माँग मिठाई खाओ।
सोच समझ लो ठंडे मन से, जो माँगो सो पाओ ।

या फिर ले लो पँख सुनहले, पंछी बन उड़ जाओ।
या फिर तितली के पर ले लो, फूल– फूल इतराओ।

सूरज चंदा तारे ले लो, धवल चाँदनी प्यारी ।
जो भी माँगो पूरी होगी, इक्षा आज तुम्हारी ।

हाथ जोड़ कर करूँ प्रार्थना, विनती सुनो हमारी।
सारी दुनिया में सच मुझको, माँ है सबसे प्यारी ।

एक तरफ हैं सूरज चंदा, धरती अम्बर बादल ।
सिर पर मेरे तना रहे प्रभु, मेरी माँ का आँचल ।

ये वादियां

कविता

सीमा बिजल्वाण
धर्मपत्नी श्री जे.पी.बिजल्वाण
उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), टिहरी

झील से उठते हैं,
बादल घनेरे,
हवाओं में खुशबू के हैं बसेरे,
ठंडी हवाएं सिरहन जगाती,
तारों के पहरों में रातें जगमगाती,
समय का ये पहर,
ठहर कर है जाता,
प्रकृति का अद्भुत,
रूप बनाता ।

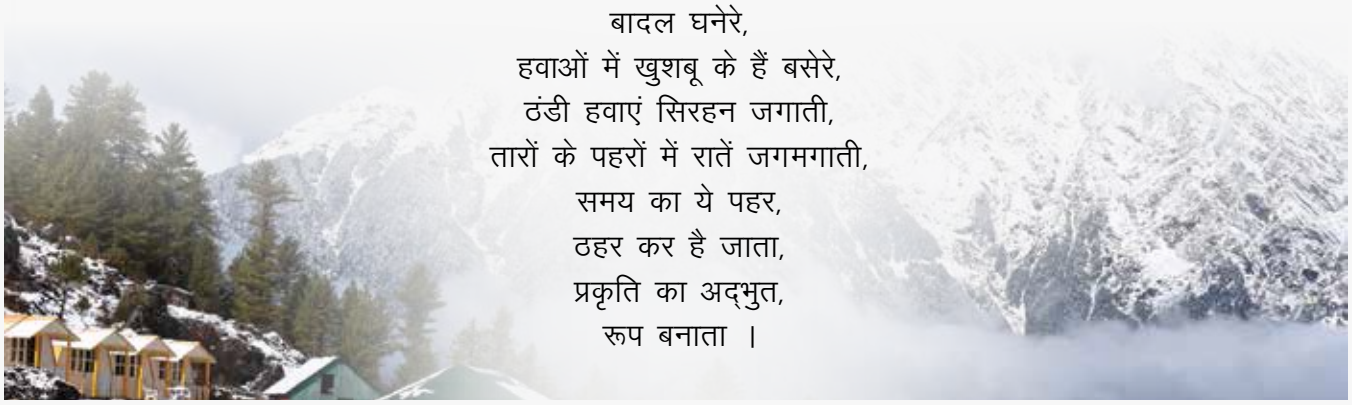

मेरे देश की मिट्टी

कविता

पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा), ऋषिकेश

मेरे देश की मिट्टी से कुछ ऐसी खुशबू आए,
घर, आंगन, गलियारे महकें, अद्भुत मस्ती छाए,
अपनी संस्कृति को विदेश में भी अपनाया जाए,
होली, ईद, दशहरा, दीवाली सब मिल–जुल कर मनाएं,

यहां पे जो भी आए वो फिर जाने से कतराए।
मां के कदमों में जन्नत है, यहां सिखाया जाए।
और पिता को आसमान से ऊंचा समझा जाए।
बीवी वफा की मूरत है ये यही पे पाया जाए।
पति को देवताओं की श्रेणी में रखकर पूजा जाए।
यहां पे जो भी आए वो फिर जाने से कतरायें।

बहन की राखी का बंधन कोई भी भूल ना पाए।
बेटी को ससुराल भेज पिता ऋण मुक्त हो जाए।
आदर्शों, नियमों की सीमा, कोई लांघ ना पाए।
परंपराओं और मूल्यों को सबसे ऊपर माना जाए।
यहां पे जो भी आए वो फिर जाने से कतराए।

गाय माता कहकर जीवों का सम्मान बढाएं।
भगवान का वाश के रूप में पत्थर को भी पूजा जाए।
आतंकवाद से लड़ने को सब जाति और धर्म भुलाएं।
एक दूजे के काम सब लोग वक्त पे आए।
यहां पे जो भी आए वो फिर जाने से कतराए।

विश्व शान्ति का पाठ सारी दुनिया को सिखलाएं।
जियो और जीने दो का नारा मिलजुल कर लगाएं।
अपने देश में बोली जाती है विभिन्न भाषाएं।
आओ सब मिलकर हिंदी का सम्मान बढ़ाएं।
यहां पे जो भी आए वो फिर जाने से कतराए।

सुबह कहती है हमसे

कविता

सीमा बिजल्वाण
धर्मपत्नी श्री जे.पी.बिजल्वाण
उप प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), टिहरी

अंबर को घेरे हवाओं को छूते,
चले है बादल घनेरे घनेरे,
टप–टप बूंदें धरा पर गिराते,
सावन के झूले संग में लाते,
कोहरे की घनी चादर से,
मन को मेरे तुम छू कर जाते।

राजभाषा गतिविधियां एवं आयोजित कार्यक्रम

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

पहली बैठक

बैठक को संबोधित करते निदेशक (वित्त), श्री जे. बेहेरा

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 16 मार्च, 2022 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन श्री जे. बेहेरा, निदेशक (वित्त) की अध्यक्षता में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक में कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। बैठक में समिति के सदस्य सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों एवं यूनिट/कार्यालयों में हिंदी में किए गए मूल पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के प्रतिशत की स्थिति के संबंध में अवगत कराया। इसके साथ ही उन्होंने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर हिंदी अनुभाग द्वारा की गई अनुपालन कार्रवाई एवं भावी लक्ष्यों के बारे में भी जानकारी दी। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर राजभाषा अनुभाग द्वारा की गई अनुपालनात्मक कार्रवाई पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि जिस प्रकार राजभाषा अनुभाग के अधिकारियों ने प्रत्येक विभाग एवं अनुभाग में जाकर कम्प्यूटरों पर कार्य करने की जांच की है और अधिकारियों व कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी में कम्प्यूटरों पर कार्य करने की समस्याओं का समाधान किया है वह वास्तव में सराहनीय है। उन्होंने सभी उपस्थित अधिकारियों को होली की शुभकामनाएं संप्रेषित की।

दूसरी बैठक

बैठक में राजभाषा कार्यक्रम पर चर्चा

23 जून, 2022 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन श्री जे.बेहेरा, निदेशक वित्त की अध्यक्षता में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक में कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। बैठक में समिति के सदस्य सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की। उन्होंने सर्वप्रथम राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2022–23 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम पर चर्चा की। उन्होंने कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों एवं यूनिट/कार्यालयों में हिंदी में किए गए मूल पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के प्रतिशत की स्थिति के संबंध में अवगत कराया। इसके साथ ही उन्होंने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर हिंदी अनुभाग द्वारा की गई अनुपालन कार्रवाई एवं भावी लक्ष्यों के बारे में भी जानकारी दी गई। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी पत्राचार में थोड़ा सा ओर प्रयास करने से हम वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि निगम में हिंदी कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं एवं अन्य राजभाषा संबंधी गतिविधियों को नियमित रूप से संचालित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा कहा कि निगम में राजभाषा के सुदृढ़ कार्यान्वयन के कारण ही निगम को एनटीपीसी राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है इसके लिए उन्होंने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को शुभकामनाएं संप्रेषित की।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

पहली कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला का दृश्य

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 11 मार्च, 2022 को हिंदी नोडल अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के शुभारंभ पर वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री ईश्वर दत्त तिग्गा एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यशाला में श्री शर्मा ने हिंदी नोडल अधिकारियों को हिंदी प्रगति की तिमाही रिपोर्ट भरने के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत 14 प्रकार के कागजात द्विभाषी तैयार करने, हिंदी पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में देने, अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर भी हिंदी में देने, 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के साथ मूल पत्राचार शत प्रतिशत हिंदी में करने तथा टिप्पणी लेखन न्यूनतम 75 प्रतिशत हिंदी में करने से संबंधित जानकारी दी। कार्यशाला में 27 नोडल अधिकारियों ने प्रतिभागिता की।

दूसरी कार्यशाला

मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की अध्यक्षता में हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 15 मार्च, 2022 को गैर–कार्यपालकों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के शुभारंभ पर वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह का स्वागत पुस्तक एवं पुष्प भेंट कर किया। श्री शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि कोरोना के लंबे अंतराल के बाद अब हम हिंदी कार्यशालाओं का आयोजित फिजीकली करने में सफल हो पा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने अपने संबोधन में कहा कि कार्यालय में गैर कार्यपालक वर्ग के सभी कर्मचारी हिंदी में कार्य करने में निपुण है और अपना कार्य हिंदी में ही करते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित किया गया है कि कार्यालय के प्रत्येक कर्मचारी को दो वर्ष में एक बार हिंदी कार्यशाला में भाग लेना अनिवार्य है ताकि उन्हें समय–समय पर राजभाषा नीति, नियम एवं अधिनियमों एवं हिंदी के प्रयोग को आसान बनाने में राजभाषा विभाग के द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी जा सके।

कार्यशाला में प्रतिभागियों श्री पंकज कुमार शर्मा ने राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 के बारे में जानकारी देने हुए सारगर्भित व्याख्यान दिया । उन्होंने संविधान में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए किए गए प्रावधानों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले 14 प्रकार के दस्तावेजों को सही रूप में द्विभाषी जारी करने की जानकारी दी। कार्यालय में सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड पहले से ही इनेबल है और कर्मचारी इसके माध्यम से टाइपिंग कर रहे हैं।

अनेक कर्मचारियों ने कहा कि विंडोज 11 के अपडेट होने के बाद उन्हें यूनिकोड में कार्य करने में परेशानी हो रही है। श्री शर्मा ने अनेक वैकल्पिक टूल्स के प्रयोग के बारे में बताया जिनके माध्यम से हिंदी में आसानी से कार्य किया जा सकता है। कार्यशाला में 19 गैर कार्यपालकों ने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर प्रतिभागियों को हिंदी की साहित्यिक पुस्तकें भी वितरित की गई।

तीसरी कार्यशाला

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में मानव संसाधन विकास विभाग के सौजन्य से 01 जून, 2022 को नए कार्यपालक प्रशिक्षु (वित्त) के अभिमुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उनके लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के शुभारंभ पर श्रीमती हिमांशु राणा, उप प्रबंधक (मा.सं.) ने आमंत्रित संकाय सदस्य श्री पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी का स्वागत करते हुए उनका प्रतिभागियों से परिचय कराया । श्री शर्मा ने अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों को सरकारी कामकाज में हिंदी की आवश्यकता एवं इसके प्रयोग के बारे में जानकारी देते हुए राजभाषा नीति, नियम एवं अधिनियमों की जानकारी दी। साथ ही उन्हें टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में राजभाषा के कार्यान्वयन से संबंधित जानकारी भी दी गई। कार्यशाला में 09 कार्यपालक प्रशिक्षुओं ने प्रतिभागिता की।

चौथी कार्यशाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में सीबीआरआई रुड़की के सौजन्य से 24 जून, 2022 को सदस्य संस्थानों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, श्री सोमेश्वर पांडे को आमंत्रित किया गया था । कार्यक्रम के शुभारंभ पर सीबीआरआई रुड़की के हिंदी अधिकारी, श्री मेहर सिंह ने सभी उपस्थित अधिकारियों का स्वागत किया। नराकास सचिव श्री पंकज कुमार शर्मा ने नराकास, हरिद्वार की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला के महत्व को रेखांकित किया। सीबीआरआई रुड़की के डा. प्रदीप चौहान, प्रभारी (राजभाषा) ने सभी उपस्थित सदस्य संस्थानों के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ–साथ मुख्य वक्ता का परिचय दिया ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, श्री सोमेश्वर पांडे कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए

मुख्य वक्ता श्री सोमेश्वर पांडे ने भारत के संविधान में भाषायी प्रावधान से लेकर राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्री पांडे ने हिंदीतर भाषी कार्मिकों को अंकों के माध्यम से हिंदी सीखने का सरल तरीका बताया और अपने व्याख्यान से यह साबित कर दिया कि सरकारी कामकाज हिंदी में करना बहुत सहज व सरल है। उन्होंने श्रुत लेखन, टिप्पणी, ईमेल में द्विभाषी हस्ताक्षर, गूगल लेंस, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर, लीला राजभाषा एप आदि पर विस्तार से चर्चा की। कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों ने विचारों का आदान–प्रदान कर सक्रिय रूप से भागीदारी की । यह अत्यंत ज्ञानवर्धक व रोचक कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम के अंत में सीबीआरआई, रुड़की के हिंदी अधिकारी श्री सूबा सिंह ने सभी प्रतिभागियों एवं उनके कार्यालय प्रमुखों, नराकास सचिवालय तथा मुख्य वक्ता का आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में बीएचईएल हरिद्वार, टीएचडीसी ऋषिकेश, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की, अनेक बैंकों, बीमा कम्पनियों, केंद्रीय विद्यालयों तथा अन्य केंद्रीय कार्यालयों के 112 कार्मिकों ने भाग लिया। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश के वरि.प्रबंधक स्तर के 42 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

टिहरी यूनिट

पहली कार्यशाला

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में 11 मार्च, 2022 को अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक, डॉ. ए.एन. त्रिपाठी एवं मुख्य संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ प्रमुख अतिथिगणों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक, डॉ.ए.एन. त्रिपाठी ने राजभाषा के स्वरुप एवं महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम सभी 'क' क्षेत्र में आते हैं इसलिए हम सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त कार्य हिंदी में ही करें। हमें अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी ने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी भाषा के वर्तमान स्वरूप एवं भविष्य एवं कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप एवं पत्राचार के विभिन्न रूप पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी द्वारा राजभाषा नीति–नियम, कंप्यूटर व मोबाइल में हिंदी वॉइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली का प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण दिया गया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनि. अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 20 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

दूसरी कार्यशाला

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में 01 जून, 2022 को अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन, डॉ. ए.एन. त्रिपाठी एवं मुख्य संकाय सदस्य, श्री डी.एस.रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (सेवानिवृत्त), केएचईपी, कोटेश्वर का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ प्रमुख अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक, डॉ.ए.एन. त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि हमारा कार्यालय 'क' क्षेत्र में स्थित है, इसलिए हमें अपने सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने चाहिए।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ करते अधिकारी

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (सेवानिवृत्त), श्री डी.एस. रावत ने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी भाषा के वर्तमान स्वरूप एवं इसके भविष्य के बारे में बताया तथा कार्यालयीन हिंदी एवं पत्राचार के विभिन्न प्रकारों पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी ने राजभाषा नियम, अधिनियम एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण दिया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 26 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

कोटेश्वर यूनिट

पहली कार्यशाला

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, कोटेश्वर परियोजना के कर्मचारियों के लिए 15 मार्च, 2022 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाप्रबंधक (परियोजना), श्री ए.के. घिडिल्याल एवं मुख्य संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक (परियोजना), श्री ए.के. घिडिल्याल ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों से सरकारी कामकाज हिंदी में करने की अपील की ।

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी ने अपने व्याख्यान से सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया एवं उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया । प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी ने कर्मचारियों को राजभाषा नीति–नियम, कंप्यूटर व मोबाइल में हिंदी वॉइस टाइपिंग आदि के बारे में जानकारी दी । कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनि. अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। कार्यशाला में 20 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

दूसरी कार्यशाला

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, कोटेश्वर परियोजना के कर्मचारियों के लिए 02 जून, 2022 को एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाप्रबंधक (परियोजना), कोटेश्वर, श्री ए.के.घिडिल्याल एवं अपर महाप्रबंधक, (मानव संसाधन एवं प्रशासन), डॉ. ए.एन. त्रिपाठी, मुख्य संकाय सदस्य, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (सेवानिवृत्त), श्री डी.एस. रावत का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ सभी प्रमुख अतिथियों व अधिकारियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक (परियोजना), कोटेश्वर, श्री ए.के. घिडिल्याल ने अपने संबोधन में कहा कि 'क' क्षेत्र में होने के नाते हमें अपने सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने चाहिए।

मुख्य संकाय सदस्य, श्री डी.एस.रावत को पुस्तक भेंट करते महाप्रबंधक (परियोजना), कोटेश्वर, श्री ए.के.घिडिल्याल

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (सेवानिवृत्त), श्री डी.एस. रावत ने उपस्थित प्रतिभागियों को कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप एवं पत्राचार पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यशाला में प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी, द्वारा राजभाषा नियम, अधिनियम एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण दिया गया। कार्यशाला का संचालन श्री आर. डी. ममगाई, उप प्रबंधक, जन संपर्क/हिंदी द्वारा किया गया। कार्यशाला में 30 कर्मचारियों ने भाग लिया।

अन्य कार्यालय

31 मार्च, 2022 को समाप्त तिमाही में एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी में 29 मार्च, 2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 06 कार्यपालकों एवं 03 गैर कार्यपालकों ने प्रतिभागिता की। वीपीएचईपी पीपलकोटी में 04 मार्च, 2022 को आयोजित कार्यशाला में 16 कार्यपालकों एवं 10 गैर कार्यपालकों ने प्रतिभागिता की। खुर्जा एसटीपीपी खुर्जा में 28 मार्च, 2022 को आयोजित कार्यशाला में 18 कार्यपालकों एवं 08 गैर कार्यपालकों ने प्रतिभागिता की। 30 जून, 2022 को समाप्त तिमाही में एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी में 29 जून, 2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 09 अधिकारियों व कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की।

हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

कारपोरेट स्तरीय राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता

टीएचडीसी इंडिया लि. के कारपोरेट कार्यालय के साथ–साथ सभी यूनिटों एवं कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए दिनांक 10 मार्च, 2022 को गूगल फॉर्म के माध्यम से कारपोरेट स्तरीय ''राजभाषा ज्ञान एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में श्री रवि बुढ़लाकोटी, उप प्रबंधक (औद्योगिक अभियांत्रिकी), ऋषिकेश ने प्रथम, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि.प्रबंधक (प्रशासन) ने द्वितीय, श्री मनीष बोकोलिया, उप प्रबंधक खुर्जा ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। साथ ही श्रीमती रश्मि बडोनी, प्रबंधक (आई.टी.), ऋषिकेश, श्री हरीश चन्द्र उपाध्याय, वरि प्रबंधक (जी एंड जी), ऋषिकेश, श्री अजय कुमार, उप महाप्रबंधक (जी एंड जी), पीपलकोटी, श्री जी.एस. चौहान, वरि. प्रबंधक (लागत अभियांत्रिकी), ऋषिकेश ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। सभी विजेताओं को नगद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति हरिद्वार के तत्वावधान में एनआईएच रुड़की के सौजन्य से समिति के सदस्य संस्थानों के लिए 23 मई, 2022 से 25 मई, 2022 तक ''ग्लोबल वार्मिंग एक बड़ी चुनौती'' विषय पर ऑनलाइन हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता की। इस प्रतियोगिता में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के उपमहाप्रबंधक, श्री शिवराज चौहान ने तृतीय पुरस्कार एवं वरि. प्रबंधक (जी एण्ड जी), श्री हरीश चन्द्र उपाध्याय ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। विजेताओं को एनआईएच रूड़की के द्वारा नगद पुरस्कार प्रदान किए गए। विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए गए।

खुर्जा कार्यालय में कवि सम्मेलन का आयोजन

कवि सम्मेलन का दृश्य

खुर्जा सुपर थर्मल पॉवर परियोजना में राजभाषा हिंदी के प्रति कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से होली के अवसर पर 16 मार्च, 2022 को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में सर्वप्रथम मुख्य महाप्रबंधक श्री कुमार शरद एवं श्रीमती बिनीता शरद ने वरिष्ठ कवि श्री बलबीर सिंह खिचड़ी, कवयित्री श्रीमती कल्पना शुक्ला, कवि श्री उपेन्द्र पांडेय, कवि श्री राधाकांत पांडेय एवं श्री कामता माखन को पुष्पगुच्छ एवं शॉल भेंटकर सम्मानित किया। तत्पश्चात सम्मेलन की शुरुआत मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) श्री कुमार शरद, श्रीमती बिनीता शरद, महाप्रबंधक (सतर्कता) श्री अजय गोयल, महाप्रबंधक (खुर्जा) श्री अजय वर्मा एवं सभी सम्मानित कवियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई।

श्री राधाकांत पांडेय एवं श्री उपेन्द्र पांडेय ने कवि सम्मेलन का अद्भुत संचालन किया। कार्यक्रम में बलबीर सिंह खिचड़ी और कल्पना शुक्ला ने श्रृंगार रस की कविताओं के साथ सम्मेलन में उपस्थित सभी लोगों का मनोरंजन किया। कल्पना शुक्ला की 'बेटी' पर लिखी कविता से लोग भाव–विभोर हो उठे। श्री उपेन्द्र पांडेय ने अपनी बहुप्रशंसित कविता 'पानी' सुना कर काफी सराहना बटोरी, वहीं कामता माखन ने हास्य कविताओं एवं व्यंग्य से लोगों को खूब हंसाया। मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) ने सभी कवियों की सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया। इसके साथ ही सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों ने एक दूसरे को गुलाल लगाकर रंगोत्सव की बधाई दी। कार्यक्रम की समाप्ति पर वरि.प्रबंधक, श्री ए.के. विश्वकर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

ग्रुप फोटोग्राफ में कविगणों के साथ मुख्य महाप्रबंधक, श्री कुमार शरद एवं अन्य अधिकारीगण

विद्युत मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश का राजभाषा निरीक्षण

श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार ने 25 फरवरी, 2022 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश का राजभाषा निरीक्षण किया। श्री अमित प्रकाश के साथ विद्युत मंत्रालय के वरि. अनुवाद अधिकारी, श्री अशोक बाबू भी उपस्थित थे।

विद्युत मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा), श्री अमित प्रकाश एवं वरि. अनुवाद अधिकारी, श्री श्याम बाबू का स्वागत करते श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) एवं उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा

निरीक्षण के दौरान श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) ने विद्युत मंत्रालय के दोनों अधिकारियों का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंट कर किया। वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने श्री अमित प्रकाश को कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी तथा उन्हें निरीक्षण संबंधी दस्तावेज प्रस्तुत किए। श्री अमित प्रकाश ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले दस्तावेजों, हिंदी में प्राप्त पत्रों के हिंदी में उत्तर देने, अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देने, हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन संबंधी दस्तावेजों का अवलोकन किया। विद्युत मंत्रालय के दोनों अधिकारियों ने कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश के विभिन्न विभागों में विजिट कर राजभाषा हिंदी में कार्य की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने पुस्तकालय में हिंदी की पुस्तकों का अवलोकन भी किया तथा भूगर्भ एवं भूतकनीकी संग्रहालय का दौरा भी किया। उन्होंने कहा कि सभी विभागों व अनुभागों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति अच्छी है जिसे इसी प्रकार बरकरार रखने की आवश्यकता है।

नराकास, हरिद्वार की 33वीं बैठक संपन्न

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश ने जीता नराकास राजभाषा वैजयंती का प्रथम पुरस्कार

नराकास राजभाषा वैजयंती के प्रथम पुरस्कार की घोषणा

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश को वर्ष 2020–21 के लिए सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की श्रेणी में नराकास राजभाषा वैजयंती के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार की घोषणा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 21 जनवरी, 2022 को आयोजित हुई 33 वीं अर्धवार्षिक बैठक में की गई। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार देश की बड़ी नराकासों में से एक है जिसके सदस्य संस्थानों की संख्या 63 है। इस नराकास में रुड़की, हरिद्वार, ऋषिकेश एवं पौड़ी में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय/विभाग/पीएसयू/संस्थान/बैंक शामिल हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 33वीं अर्धवार्षिक बैठक वीडियो क्रांफेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई, जिसमें अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक (वित्त), श्री जे.बेहेरा, श्री वीर सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) एवं श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहा. निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के साथ नराकास, हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति ऑनलाइन जुड़े हुए थे। बैठक का संचालन श्री पंकज कुमार शर्मा, वरि.हिंदी अधिकारी एवं सचिव, नराकास हरिद्वार द्वारा किया गया । संचालन कक्ष में श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) एवं हिंदी अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे । अध्यक्ष महोदय से अनुमति प्राप्त कर बैठक का संचालन करते हुए समिति के सचिव श्री शर्मा ने सदस्य संस्थानों से प्राप्त हुई अर्धवार्षिक रिपोर्टों की समीक्षा की और पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई एवं भावी कार्यलक्ष्यों तथा राजभाषा विभाग के निर्देशों/अनुदेशों से अवगत कराया।

मुख्य महाप्रबंधक, श्री वीर सिंह हिंदी अनुभाग के अधिकारियों को शील्ड प्रदान करते हुए

इस अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहा. निदेशक (कार्यान्वयन) ने नराकास हरिद्वार के प्रयासों की सराहना की । उन्होंने नराकास, वैजयंती योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किए गए संस्थानों एवं छमाही के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि छमाही के दौरान इस प्रकार की गतिविधियां निरंतर चालू रखने की आवश्यकता है जिससे छमाही में कोई अंतराल न आए। उन्होंने प्रमुख सदस्य संस्थानों को शामिल करते हुए एक उप समिति बनाने का सुझाव भी दिया जिसमें राजभाषा से संबंधित गतिविधियों के बारे में चर्चा कर भावी कार्य योजना को सुदृढ़ बनाया जा सके। इसके साथ ही उन्होंने सदस्य संस्थानों से राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित करने, नियम–5 के अंतर्गत हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देने तथा अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी हिंदी में देने का अनुरोध किया ।

बैठक को संबोधित करते निदेशक (वित्त), श्री जे. बेहेरा

माननीय अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लि. के निदेशक (वित्त), श्री जे. बेहेरा ने सभी सदस्य संस्थानों के प्रमुखों एवं ऑनलाइन जुड़े सभी अधिकारियों को नववर्ष एवं भावी गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दी। उन्होंने अपने संबोधन में नराकास वैजयंती के विजेता संस्थानों एवं प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि आगे भी इसी मनोयोग से प्रतिभागिता करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रतियोगिताओं एवं कार्यशाला में प्रतिभागिता की संख्या में वृद्धि पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सरल एवं प्रचलित शब्दों के प्रयोग से हम सब मिलकर हिंदी के विकास में योगदान कर सकते हैं। उन्होंने सभी संस्थान प्रमुखों से अनुरोध किया कि नराकास की बैठकों में अवश्य ही प्रतिभागिता करें।

नराकास, टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की 22वीं अर्द्धवार्षिक बैठक 15 दिसंबर, 2021 को श्री यू.के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (टीसी) टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में ऑनलाइन आयोजित की गई। बैठक में सर्वप्रथम सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, महाप्रबंधक, परियोजना (कोटेश्वर) श्री ए.के. घिडिल्याल, अपर महाप्रबंधक (मा.स.एवं प्रशा.) डॉ. ए.एन. त्रिपाठी एवं सभी उपस्थित सदस्यों/प्रतिनिधि सदस्यों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस बैठक में नराकास के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंको एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/ स्वायत्त निकायों के प्रमुख/ प्रतिनिधियों सहित कुल 13 सदस्य उपस्थित हुए। बैठक की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए सदस्य सचिव ने सदस्य कार्यालयों से प्राप्त हुई अर्द्धवार्षिक रिपोटों की समीक्षा की।

राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा ने समीक्षा के दौरान राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3), राजभाषा नियम–5, हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी, हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण एवं कंप्यूटर में यूनिकोड प्रणाली आदि पर विस्तार से चर्चा की तथा रिपोर्ट में पाई गई खामियों से अवगत कराते हुए उन्हें भविष्य में दूर करने हेतु सलाह दी। श्री मेहरा ने अपने संबोधन में सभी कार्यालयों से राजभाषा कार्यान्वयन को अपने–अपने कार्यालयों में प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु अपेक्षा की। उन्होंने नराकास की बैठकों में कार्यालयाध्यक्षों की उपस्थिति एवं नराकास की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने हेतु आग्रह किया।

बैठक में ऑनलाइन भाग लेते अध्यक्ष, श्री यू. के. सक्सेना एवं सचिव, श्री इन्द्रराम नेगी

बैठक की अध्यक्षता कर रहे टीएचडीसी के कार्यपालक निदेशक (टीसी) ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि नराकास की अपनी सीमाएं हैं तथा सभी अधीनस्थ कार्यालयों के प्रमुखों/सदस्यों के सहयोग एवं समन्वय से नराकास की गतिविधियों को चरम सीमा तक ले जाया जा सकता है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने हमें जो उत्तरदायित्व सौंपा है उसे हम अपने स्तर से तथा आप सबके सहयोग से पूरा कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने हेतु हम हमेशा तत्पर हैं। उन्होंने नराकास में सदस्य संस्थानों की कम उपस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की।

हास-परिहास

- रोज सुबह पति–पत्नी दस मिनट तक जोर–जोर से लड़ें। यदि उसके बाद भी दोनों की साँस ठीक से चलती रहे, तो इसका मतलब आप कोरोना मुक्त हैं।

- रहिमन वहाँ न जाईये जहाँ जमे हो लोग, ना जाने किस रूप में लगे कोरोना रोग।

- **गब्बर सिंह**–जो डर गया वो मर गया....
  सांभा–अरे नहीं सरदार, कोरोना वायरस से जो डर गया, वो बच गया।

- **पति**–हम साथ मिलकर कोरोना से लड़ेंगे,
  पत्नी–मुझे कोरोना से नहीं लड़ना, मुझे तो आपके साथ ही लड़ना है।

- **पप्पू**– तुम ऑपरेशन कराए बिना ही अस्पताल से क्यों भाग आए ?
  रोहित–नर्स बार–बार कह रही थी कि डरो मत, हिम्मत रखो, कुछ नहीं होगा, ये तो छोटा सा ऑपरेशन ही तो है।
  पप्पू– तो इसमें डरने वाली क्या बात है, वह सही ही तो कह रही थी।
  चिंटू– भाई, वो मुझसे नहीं, डाक्टर से कह रही थी।

- पति–पत्नी में जोरदार झगडा हुआ, पत्नी अपना घर छोडकर मायके चली गई। वो इतने गुस्से में थी कि पति को बीच रास्ते से ही मैसेज किया कि अब अपने फोन से मेरा नंबर भी डिलीट कर देना।
  पति ने रिप्लाई मैसेज किया – Who is This ?

- बच्चा पुराने फोटो की एलबम देखते हुए बोला, मम्मी ये फोटो में आपके साथ जो आदमी खड़ा है वो कौन है? मम्मी ने कहा कि बेटा ये तेरे पापा हैं। ये सुनकर बच्चा बोला – अगर ये पापा है तो हम जिस गंजे के साथ रहते है, कौन है वो ?

- **पप्पू** – पापा मुझे एक लड़की पसंद है, मैं उससे शादी करना चाहता हूँ।
  पापा – क्या वो भी तुझे पसंद करती है ?
  पप्पू – हां, वो भी मुझे पसंद करती है और शादी करना चाहती है।
  पापा – जिस लड़की की पसंद ऐसी हो, उसे मैं अपनी बहू कभी नहीं बना सकता।

- **पति** – ये कैसी दाल बनाई है? ना इसमें नमक है, ना मिर्च, बिल्कुल फीकी है। तुम सारा दिन मोबाइल में लगी रहती हो, कुछ पता नही चलता, क्या डालना है क्या नहीं?
  पत्नी – बेलन दिखाते हुए – पहले तुम मोबाइल साइड में रखकर रोटी खाओ, कबसे देख रही हूं, पानी में डुबो–डुबो कर रोटी खा रहे हो।

- मेरा इंसानियत पर से भरोसा तब उठ गया जब शादी में एक खूबसूरत लड़की मुझसे कहने लगी – ''क्या आप डांस करना पसंद करोगे''...? मैंने खुश होते हुए कहा– ''हां–हां क्यों नहीं'' इतने में लड़की बोली – ''तो फिर आपकी कुर्सी मैं ले जाऊँ...?

- सर्दी में आलू के परांठे खाने के बाद धूप में मगरमच्छ की तरह पड़े रहने में जो मजा है..!! "उसे ही असली सुख कहा गया है''।

सुभद्रा कुमारी

सुभद्रा कुमारी का जन्म 16 अगस्त, 1904 को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के निकट निहालपुर गांव में एक संपन्न परिवार में हुआ था। सुभद्रा कुमारी को बचपन से ही काव्य–ग्रंथों से विशेष लगाव व रूचि थी। आपका विद्यार्थी जीवन प्रयाग में ही बीता। अल्पायु में ही सुभद्रा कुमारी की पहली कविता प्रकाशित हुई। सुभद्रा और महादेवी वर्मा दोनों बचपन की सहेलियां थी। सुभद्रा कुमारी का विवाह खंडवा (मध्य प्रदेश) निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हुआ। पति के साथ वे भी महात्मा गांधी के आंदोलन से जुड़ गई और राष्ट्र–प्रेम पर कविताएं करने लगी। 15 फरवरी 1948 को एक सड़क दुर्घटना में आपका निधन हो गया।

साहित्य कृतियां

इनका पहला काव्य–संग्रह ''मुकुल'' 1930 में प्रकाशित हुआ। इनकी चुनी हुई कविताएं ''त्रिधारा'' में प्रकाशित हुई हैं। झांसी की रानी इनकी बहुचर्चित रचना है।

बहुचर्चित रचनाएंः अनोखा दान, आराधना, इसका रोना, उपेक्षा, उल्लास, कलह–कारण, कोयल, खिलौने वाला, चलते समय, चिंता, जीवन–फूल, झांसी की रानी की समाधि पर, झांसी की रानी, झिलमिल तारे, ठुकरा दो या प्यार करो, तुम, नीम, परिचय, पानी और धूप, पूछो, प्रतीक्षा, प्रथम दर्शन, प्रभु तुम मेरे मन की जानो, प्रियतम से, फूल के प्रति, विदाई, भ्रम, मधुमय प्याली, मुरझाया फूल, मेरा गीत, मेरा जीवन, मेरा नया बचपन, मेरी टेक, मेरे पथिक, यह कदम्ब का पेड़, यह कदम्ब का पेड़–2, विजयी मयूर, विदा, वीरों का हो कैसा बसंत, वेदना, व्याकुल चाह, समर्पण, साध, स्वदेश के प्रति, जलियांवाला बाग में बसंत ।

सुभद्रा जी को प्रायः उनके काव्य के लिए ही जाना जाता है लेकिन उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भी सक्रिय भागीदारी की और जेल यात्रा के पश्चात आपके तीन कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए, जो निम्नलिखित हैं :–

बिखरे मोती (1932), उन्मादिनी (1934), सीधे–साधे चित्र (1947)

रामधारी सिंह दिनकर
(23 सितंबर,1908–24 अप्रैल, 1974)

"है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके वीर नर के मग में ।
खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़ ।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है ।"

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

www.paromita.org